ज्ञानानन्दरत्नाकरकी

अनुक्रमणिका ।

इति ।

श्रीः।

(ओंनमः सिद्धं)

ज्ञानानन्दरत्नाकर।

द्वितीयभाग।

शाखी।
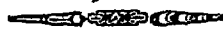
परमब्रह्म स्वरूप तिहुँ जग भूपहो जग तारजी ॥
महिमा अनन्त गणेश शेष सुरेश लहत न पारजी ॥
मैं दास तेरा चरण चेरा हरो मेरा भारजी ॥
जिन भक्त नाथूराम को जन जान पार उतारजी ॥१॥

दौड़।

प्रभु मैं शरण लिया थारा। जन्म मद मरण हरो म्हारा ॥
प्रभु मैं सहा दुःख भारा। किसी से टरा नहीं टारा ॥
विरदसुननाथूरामजिनभक्त। भजन थारेमें हुएआशक्तजी १

श्री ऋषभदेवस्तुति ॥ लावनी ॥ १ ॥

श्री मरुदेवीके लाल नाभिके नन्दन। काटो आठोविधिजाल नाभिके नन्दन॥ टेक। सुर अरचें तुम्हें त्रिकाल नाभिकेनन्दन। सौइंद्र नवामें भाल नाभिके नन्दन॥

तुम सुनियत दीनदयालु नाभिके नन्दन । स्वार्थ विन करत निहाल नाभिके नंदन ॥ कीजै मेरा प्रतिपाल नाभिके नन्दन ॥ काटो आठो विधि जाल० ॥ १ ॥ लखि तुम तनु दीप्ति विशाल नाभिके नन्दन ॥ हों कोड़ि काम पामाल नाभिके नन्दन ॥ त्रिभुवन का रूप कमाल नाभिके नन्दन । मानों सांचे दिया ढाल नाभिके नन्दन ॥ दर्शन नाशें अघ हाल नाभिके नन्दन । काटो आठो विधि जाल नाभिके० ॥ २ ॥ तनु वज्र मई मय खाल नाभिके नन्दन । ताये सोने सम लाल नाभिके नन्दन । मल रहित देह सुकुमाल नाभिके नन्दन । बाढ़ें ना नख अरु बाल नाभिके नन्दन ॥ यह शुभ अतिशयका ख्याल नाभिके नंदन । काटो आठो विधि जाल नाभि० ॥ ३ ॥ जो तुम गुण मणिकी माल नाभिके नंदन । कंठ धरें प्रातःकाल नाभिके नन्दन ॥ लहि सुर नर सुख तत्काल नाभिके नन्दन । पावे शिव संयम पाल नाभिके नन्दन ॥ वहे नाथूराम का सवाल नाभिके नन्दन । काटो आठोविधि जाल नाभिके नन्दन ॥ ४ ॥

पारसनाथकी लावनी ॥ २ ॥

तुम सुनियत तारण तरण लाल वामाके । मैं आया थारे शरण लाल वामाके ॥ टेक । तुम त्रिभुवन आनँद करन लाल वामाके । विख्यात विरद दुःख हरण

लाल बामाके ॥ तनु श्याम सजल घन वरण लाल बामाके। लखि दरश लगें अघडरन लाल बामाके ॥ आनँदकर्त्ता घर धरन लाल बामाके। मैं आया थारे शरण लाल बामाके ॥ १ ॥ तुम बच सुन युग अहि करन लाल बामाके। दम्पति ना पाये जरन लाल बामाके॥ तुन कुमर काल तप धरन लाल बामाके। कच लुंच किये मृदुकरन लाल बामाके॥विहरे भू भवि उद्धरन लाल बामाके। मैं आ-या थारे शरण लाल बामाके ॥ २ ॥ सुनि ध्वनि तुम निर अक्षरन लाल बामाके। शिवली तद्भव बहु नरन लाल बा-माके ॥ बहुतों तजि वस्त्राभरण लाल बामाके। दृढ़ धारा सम्यक चरण लाल बामाके ॥ अनुव्रत धारे चौवरण लाल बामाके । मैं आया थारे शरण लाल बामाके ॥ ३ ॥ सम्यक्त लिया बहु सुरन लाल बामाके। पशु व्रती भये बसि अरन लाल बामाके ॥ वसु अरि हरि शिव त्रिय परन लाल बामाके। भये सिद्ध मिटा भय मरन लाल बामाके॥ नवें नाथूराम नित चरण लाल बामाके ॥ मैं आया थारे शरण लालबामाके ॥ ४ ॥

चौवीस तीर्थंकरके चिह्नोंकी लावनी ॥ ३ ॥

श्री चौवीसो जिन चिह्न चितारि नमोंमैं। बहु विनय सहित आठोमद टारि नमों मैं ॥ टेक। श्री ऋषभना-थके वृषभ, अजित गजगाया। संभवके हय अभि नन्दन कपि वतलाया ॥ सुमति के कोक पद्मप्रभु पद्म सुहाया।

सांथिया सुपारसके लक्षण दरशाया ॥ चंद्रप्रभु के श- शि हिरदे धारि नमों मैं । बहु विनय सहित आठो मद टारि. नमों मैं ॥ १ ॥ श्रीपुष्पदंत के मगर चिह्न पद जानो । शीतल जिनके श्रीवृक्ष चिह्न पहिचानो ॥ श्रेयान्शनाथ के पद गेंड़ा उर आनो। श्री वास पूज्य पद लक्षण महिष बखानो॥ श्री विमल नाथ पद सूर विचारि नमों मैं॥बहु विनय सहित आठो मद टारि नमों मैं ॥२॥ सेई अनंत जिनवर के लक्षण गाऊं। धर्म के वज्र मृग शांति चरण चित लाऊं॥ अज कुंथु नाथके अरहमत्स्य दरशाऊं।मल्लिके कुंभ मुनि सुव्रत कच्छ बताऊं॥ नमि नाथ पद्म दल चिह्न चितार नमोंमैं॥बहुवि० ॥ ३ ॥ श्री नेमि शंख फनि पार्सनाथपदराजे । हरिवीर नाथके चरणों चिह्न विराजे॥ ऐसे जिनवर पदनवत सर्वदुः- ख भाजे । फिर भूल नआवे पास लखत दृग लाजे ॥ कहें- नाथूराम प्रभु जग से तार नमों मैं। बहु विनय सहित आठो मदटारि नमों मैं ॥ ४ ॥

जिन भजनके उपदेशकी लावनी ॥ ४ ॥

मन वचन काम नित भजनकरो जिनवरका । यह सफल करो पर्याय पाय भवनरका । (टेक) निवसे अना दिसे नित्य निगोदमझारे । स्थावर में तनुधारे पंचप्र- कारे । फिर विकलत्रयके भुगतें दुःख अपारे । फिर भयो असेनी पंचेंद्री बहु बारे ॥ भयो पंचेंद्री सेनी जल थल अ- म्बरका । यह सफल करो पर्याय पाय भव नरका॥१॥फि-

र क्रमसे सुर नर नारकके वहुतेरे। भवधर मिथ्यावश कीने पाप घनेरे ॥ जिय पहुँचा इतरनिगोद किये बहु फेरे। तहां एक श्वास में मरा अठारह बेरे॥चिर भ्रमे किनारा मिला न भवसागरका। यह सफलकरो पर्याय पाय भवनरका॥२॥ यों लख चौरासी जिया योनि में भटका। बहुवार उदरमाताके ओंधा लटका। अब सुगुरु सीख सुन करो गुणी जन खटका। यह है झूठा स्नेह जिस में तू अटका॥नहीं कोई किसी का हितू गैर और घरका॥यह सफल करो पर्याय पाय भवनरका ॥ ३ ॥ इस नरतनुके खातिर सुरपतिसे तरसें। तिसको तुम पाके खोवत भोंदू करसे। क्षणभंगुर सुखको प्रीति लगाते भ्ररसे। तजके पुरुपार्थ वनते नारी नरसे ॥ मत रत्न गमाओ नाथूराम निजकरका। यह सफलकरो पर्याय पाय भवनरका। ४।

तथा दूसरी लावनी ॥ ५ ॥

प्रभु भजनकरो तज विषय भोगका खटका। चिरकाल भजन विन तू त्रिभुवनमें भटका। (टेक) तूनें चारों गति में किये अनंते फेरा। चौरासी लाख योनि में फिरा बहु वेरा॥ जहां गया तहीं तुझे काल बलीने घेरा। भगवान भक्ति विन कौन सहायक तेरा॥ अब कर आतम कल्याण मोह तज घटका। चिरकाल भजन विन तू त्रिभुवनमे भटका॥१॥ सुत तात मात दारादिक सब परवारे। तन धन यौवन सब विनाशीकहैं प्यारे ॥ मिथ्या इनसे स्नेह लगावत क्यारे।

येहैं पत्थरकी नाव डुबावनहारे ॥ इन बार २ तोहि भव-सागर में पटका । चिरकाल भजनबिन तू त्रिभुवन में भट-का ॥ २ ॥तूनरक वेदना दुर्गतिके दुःख भूला।नर पशुहो ग र्भ मझार अधोमुख झूला । अब किंचित सुखको पाय फि-रेतूफूला । माया मरोर से जैसे वायु बघूला ॥ तू मानत ना हीं बार २ गुरु हटका । चिरकाल भजन बिन तू त्रिभुवनमें भटका ॥ ३ ॥ अब वीतराग का मार्ग तूनेपाया । जिनरा ज भजन कर करो सफल नरकाया । तूभ्रमें अकेला यहां अकेला आया ॥ जावेगा अकेला किसकी ढूढे छाया ॥ कहें नाथूराम शठ क्यों ममता में अटका । चिरकाल भजन बिनतू त्रिभुवन में भटका ॥ ४ ॥

(शाखी)

प्रथम नमों अरिहंत हरे जिन चारि घाति विधि ॥
वसु विधि हर्त्ता सिद्ध नमों देंहिं अष्ट ऋद्धि सिधि ॥
नमों शूर गुण पूर नमों उवझाय सदा जी ॥
नमों साधु गुण गाध व्याधि ना होय कदाजी ॥

(दौड़)

पंच पद येही मुक्ति के मूल । जपो जैनी मत जावो भूल॥
नाम जिनके से शेश होफूल। करें निंदा तिनकेशिरधूल ॥
नाथूराम यही पंचनवकार।कंठ धर तरो भवोदधि पारजी॥

पंच नमस्कार की लावनी ॥ ६ ॥

नमो कारके पांचोपद पेंतिस अक्षर जो कंठ धरें ।

सुर नरके सुख भोगि वसु अरि हारिके भवसिंधु तरें ॥
(टेक)
प्रथम णमो अरिहंताणं पद सप्ताक्षर का सुनो विषय ॥
अरिहंतन को हमारा नमस्कार हो यह आशय ॥
अरिहंत तिनको कहें जिन्होंने घाति कर्म अरि कीने क्षय ॥
निज वाणी का किया उद्योत हरन भविजन की भय ॥
शेर—जिन्हों के ज्ञान में युगपत पदार्थ त्रिजगके झलके॥
चराचर सूक्ष्म अरु वादर रहे बाकी न गुरु हलके॥
भविष्यत भूत जो वर्ते समय ज्ञाता घड़ी पलके॥
अनंतानंत दर्शन ज्ञान अरु धारिहैं सुख बल के॥
तीन छत्र शिर फिरें ढुरें वसु वर्ग चमर सुर भक्ति करें ॥
सुर नर के सुख भोगि वसु अरि हारिके भवसिंधु तरें १ ॥
दुतिय णमो सिद्धाणं पदके पंचाक्षर जो सार कहे ॥
सिद्धों के तईं हमार नमस्कार हो अर्थ यहे ॥
सिद्धि चुके कर काम सिद्ध तिन नाम तृष्टि शिव धाम रहे॥
अष्ट कर्म का नाश कर ज्ञानादिक गुण आठ लहे ॥
शेर—धरें दिक्षा जो तीर्थंकर जिन्होंके नामको भजकर ॥
करें हैं नाश वसु अरिका सबल चारित्र दल सजकर ॥
नमों मैं नाथ ऐसे को सदा ही अष्ट मद तज कर ॥
सफल मस्तक हुआ मेरा प्रभूके चरणों की रजकर ॥
लेत सिद्ध का नाम सिद्धि हों काम विघ्न सब दूर टरें ॥
सुर नर के सुख भोग वसु अरि हारिके भव सिंधु तरें ॥ २॥

तृतिय णमों आइरियाणं पद सप्ताक्षर का भेद सुनो ॥
जिसके सुनते दूर होवे भव २ का खेद सुनो ॥
आचार्यन को नमस्कार हो यह जन की उम्मेद सुनो ॥
करों निर्जरा बंद कर के आश्रव का छेद सुनो ॥
शेर-मुन्यों में जो शिरोमणि हैं यती छत्तीस गुणधारी ॥
करें निज शिष्य औरों को कहें चारित्र विधि सारी ॥
प्रायश्चितलेंय मुनि जिनसेगुरूनिजजानिहितकारी ॥
हरें वसु दुष्ट कर्मों को वरें भव त्यागि शिव नारी ॥
ऐसे मुनिवर शूर धरें तप भूरि कर्मों को चूरि करें ॥
सुर नर के सुख भोगि वसु अरि हरिके भवसिंधुतरें ३॥
तूर्य णमों उवझायाणं पद सप्ताक्षर का सार कहूं ॥
उपाध्याय के तईं हो नमस्कार हर बार कहूं ॥
आप पढें औरों को पढ़ावें अध्यातम विस्तार कहूं ॥
ऐसे मुनिवर कहावें उपाध्याय जगतार कहूं ॥
शेर-पंच अरु बीस गुण धारी ऋषी उवझाय सो जानो ॥
महाभट मोहको क्षणमें परिग्रह त्यागकेहानो ॥
सप्त भय अष्ट मद तज कर करें तप घोर शूरानो॥
सहे बाइस परीषह को अचल परणाम गिरि मानो॥
शुक्ल ध्यान धर कर्म नाश कर ऐसे मुनि शिव नारि वरें ॥
सुर नर के सुख भोगि वसु अरि हरिके भव सिंधु तरें ४॥
णमो लोये सव्व साहूणं पंचम पद के ये नव वर्ण ॥
नमस्कार हो लोक के सब साधुन के वंदों चर्ण ॥

साधें तप तज भोग जान भव रोग साधु सो तारण तर्ण ॥
अष्टा विंशत मूल गुणके धारी मुनि राखो शर्ण ॥
शेर–सार ये पंच परमेष्टी भक्ति इनकी सदा पाऊं ॥
नहो क्षण एक भी अंतर जब तलक मुक्तिनाजाऊं॥
मिले सत्संग धर्मिन का सबोंके चित्त में भाऊं ॥
जपों वसु याम पद पांचो भाव धर हर्ष से गाऊं ॥
नाथूराम शिवधाम वसनको णमोकार अहो निशि उचरें ॥
सुर नरके सुख भोगि-वसु अरि हरिके भव सिंधु तरें ॥५॥

अरिहंतके ४६ गुण और १८ दोष रहितकी लावनी॥ ७ ॥

छालिस गुण युत दोष अठारह रहित देव अरिहंत नमों ॥
त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवंत नमों ॥

(टेक)

रहित पसेव देह मल वर्जित श्वेत रुधिर अति सुंदर तन ॥
प्रथम संहनन प्रथम संस्थान सुगंधित तन भगवन ॥
प्रियहित वचन अतुल बल सोहे एकसहस्र वसु शुभ लक्षण॥
ये दश अतिशय कहे जन्मत प्रभुके सुनिये भविजन ॥
मति श्रुत अवधि ज्ञान युत जन्मत सुर नरादिध्यावंत नमो॥
त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवंत नमों ॥ १ ॥
दो सौ योजन काल पड़े ना करें प्रभूजी गगण गमन ॥
चौ मुख दरशें सर्व विद्या होवें ना प्राण वधन ॥
वर ऐश्वर्य न कच नख वढ़ते नहीं लागे टमकार नयन ॥

तनुकी छाया न पड़ती नहीं कवला आहार ग्रहन ॥
केवल ज्ञान भये दश अतिशय ये प्रभुके राजंत नमों ॥
त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवंत नमों ॥ २ ॥
सकल अर्थ मय मागधी भाषा जाति विरोध तजा जीवन॥
षट ऋतुके फल पुष्प तिनकर शोभित अति सुंदर बन ॥
पुष्प वृष्टि गंधोदक वर्षा बाजे मंद सुगंध पवन ॥
जय जय होते शब्द मेदिनी विराजे ज्यों दर्पण ॥
रचें कमल सुर पद तल प्रभुके सर्व. जीव हर्षित नमों ॥
त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवंत नमों ॥ ३ ॥
निर्मल दिशा आकाश बिना कंटक अचला कीनी देवन ॥
मंगल द्रव्य आठ अग्र चक्र अगाड़ी चले गगन ॥
ये चौदह देवन कृत अतिशय सुनो चतुष्टय अब दे मन ॥
अनंत दर्शन, ज्ञान, सुख, बल प्रभुके राजे शुचि धन ॥
ऐसे गुण भंडार विराजत शिव रमणीके कंत नमों ॥
त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवंत नमों ॥ ४ ॥
तरु अशोक भामंडल सोहैं तीन छत्र अरु सिंहासन ॥
चमरदिव्य ध्वनि पुष्प वर्षारु दुंदुभी नभ बाजन ॥
प्रातीहार्य ये आठ सर्व छियालिस गुण जिन वरके पावन ॥
जो भवि धारें कंठ नित सो न करें भवमें आवन ॥
ऐसे श्री अरिहंत जिनके गुण गान करत नित संत नमों ॥
त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवंत नमों ॥ ५ ॥
क्षुधा तृषा भय राग द्वेष विस्मय निद्रा मद असुहावन ॥

आरति चिंता शोक गद स्वेद खेद जरा जन्म मरन ॥
मोह, अठारह दोष रहित ऐसे जिनवर पद करों नमन ॥
त्रिभुवन त्राता विधाता घाति कर्म जिन डाले हन ॥
नाथूराम निश्चय अनंत गुण सुमरत अघ भाजंत नमों ॥
त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवंत नमों ॥ ॥ ६ ॥

श्रीजिनेंद्रस्तुति लावनी ॥ ८ ॥

परम दिगम्बर वीतराग जिन मुद्रा म्हारी आंखोंमें ॥
बसी निरन्तर अनूपम आनँद कारी आँखोंमें ॥

(टेक)

जा दरशत वर्षत सम्यक रस शिव सुखकारी आँखोंमें ॥
विषय भोगकी वासना रही न प्यारी आंखोंमें ॥
जगअसार पहिचान प्रीति निज रूपसे धारी आंखोंमें ॥
तृष्णा नागिन जष्टि सन्तोषसे मारी आंखोंमें ॥
सब विकल्प मिट गये लखत जिन छवि बलिहारी आंखोंमें
बसी निरन्तर अनूपम आनँदकारी आंखों में ॥ १ ॥
राग द्वेष संशय विमोह विभ्रमथे भारी आंखोंमें ॥
देखत प्रभुको लेश ना रहा उजारी आंखों में ॥
कुयश कलंक रहा ना छवि लखि अचरज कारी आंखोंमें ॥
यह प्रभु महिमा कहां यह शक्ति विचारी आंखों में ॥
सहस्र नयन हरि लखत बाल छवि जिनवर थारी आंखोंमें ॥
बसी निरन्तर अनूपम आनँद कारी आंखोंमें ॥ २ ॥
मंगलरूप बालक्रीड़ा तुम लखि महतारी आंखों में ॥

आनँद धारे यथा लखि रत्न भिखारी आंखों में ॥
देव करें नित सेव शक्र से आज्ञाकारी आंखोंमें ॥
उजर न जिनके रहें हाज़िर हरबारी आंखों में ॥
निर्त करत गति भरत रिझावत देदे तारी आंखों में ॥
बसी निरंतर अनूपम आनँदकारी आंखों में ॥ ३ ॥
केवल ज्ञान भये यह दुनिया झलकत सारी आंखों में ॥
पलक न लागें न आवे नींद तुम्हारी आंखोंमें ॥
द्वादश सभा प्रफुल्लित छविलखि सुर नर नारी आंखों में ॥
किंचित कोई दृष्टिना पड़े दुःखारी आंखोंमें ॥
नाथूराम जिनभक्त दरश लखि भये सुखारी आंखों में ॥
बसी निरन्तर अनूपम आनँदकारी आंखोंमें ॥ ४ ॥

तथा ॥ ९ ॥

नाश भये सब पाप लखी जिन मुद्रा प्यारी आंखों से ॥
मोह नींद का गया अताप हमारी आंखों से ॥

(टेक)

परम दिगम्बर शांति छवी नाहिं जाय विसारी आंखों से ॥
लुब्ध भया मन यथा मणि देख भिखारी आंखोंसे ॥
होत कृतार्थ देख दर्शन तुम सुर नर नारी आंखों से ॥
परद्रव्यों को हेय लखि प्रीति निवारी आंखों से
निज स्वरूप में मग्न भये लखि सम्यक धारी आंखों से ॥
मोह नींदका गया आताप हमारी आंखों से ॥ १ ॥
कायोत्सर्ग तथा पद्मासन प्रतिमा धारी आंखों से ॥

देखत होता दरश आनँद अधिकारी आंखों से ॥
ध्यानारूढ़ अकम्प दृष्टि नाशा परधारी आंखों से ॥
विस्मय होता देख छवि अचरजकारी आंखों से ॥
देवों कृत शुभ अतिशय देखत सुख हो भारी आंखों से ॥
मोह नींद का गया आताप हमारी आंखों से ॥ २ ॥
राग द्वेष मद मोह नशे तम भक्ति उजारी आंखों से ॥
चिंता चंड़ी शक्ति संतोष से टारी आंखों से ॥
निज पर की पहिचान भई उर दृष्टि पसारी आंखोंसे ॥
जड़ मति सारी गई देखत धीधारी आंखों से ॥
अब संसार निकट आयो जिन छवी निहारी आंखों से ॥
मोह नींद का गया आताप हमारी आंखों से ॥ ३ ॥
सहस्राक्षकर निरखत वासव छवी तुम्हारी आंखों से ॥
तृप्त न होता देख छवि महा सुखारी आंखों से ॥
भाज गई विपदा छवि देखत क्षण में सारी आंखों से ॥
कोई प्राणी दृष्टि ना परे दुखारी आँखोंसे ॥
नाथूराम जिनभक्त दरश लखि कुमति विड़ारी आंखोंसे ॥
मोह नींदका गया आताप हमारी आंखोंसे ॥ ४ ॥

सिद्धों की स्तुति लावनी ॥ १० ॥

अलख अगोचर अविनाशी सब सिद्ध बसत शिव थान मेंहैं।
सर्व विश्व के ज्ञेय प्राति भासत जिन के ज्ञान में हैं ॥

(टेक)

ज्ञानावरणी नाशि अनंती ज्ञान कला भगवानमें हैं ॥

नाशि दर्शनावरण सब देखत ज्ञेय जहानमें हैं ॥
नाशि मोहनी क्षायक सम्यक युत दृढ़ निज श्रद्धाण में हैं॥
अंतराय के नाश बल अनंत युत निर्वाण में हैं ॥
आयु कर्म के नाश भये रहें अचल सिद्ध स्थानमें हैं ॥
सर्व विश्वके ज्ञेय प्रति भासत जिनके ज्ञान में हैं ॥ १ ॥
नाम कर्म हानि भये अमूरति वंत लीन निज ध्यान में हैं ॥
गोत कर्म हन अगुरु लघु राजत थिर असमान में हैं ॥
नाशि वेदनी भये अवाधित रूप मग्न सुख खान में हैं ॥
अपार गुण के पुंज अर्हंतन की पहिचान में हैं ॥
अजर अमर अव्यय पद धारी सिद्ध सिद्ध के म्यान मेंहैं॥
सर्व विश्व के ज्ञेय प्रति भासत जिन के ज्ञान में हैं ॥ २ ॥
अक्षय अभय अखिल गुण मंडित भाषे वेद पुराण में हैं ॥
देह नेह विन अटल अविचल आकार पुमान में हैं ॥
सर्व ज्ञेय प्रति भासत ऐसे ज्यों दर्पण दरम्यान में हैं ॥
ज्ञान रस्मिके पुंज ज्यों किरणें भानु विमान में हैं ॥
गुण पर्याय सहित युगपत द्रव्यें जानत आसान में हैं ॥
सर्व विश्व के ज्ञेय प्रति भासत जिन के ज्ञान में हैं ॥ ३ ॥
तीर्थंकर गुण वर्णत जिनके जो प्रधान मतिमानमेंहैं ॥
क्षद्मस्थन में न ऐसे गुण काहू पदवान में हैं ॥
गुण अनंत के धाम नहीं गुण ऐसे और महान में हैं ॥
धन्य पुरुष वे जो ऐसे धारत गुण निज कान में हैं ॥
नाथूराम जिनभक्त शक्ति सम रहें लीन गुण गान में हैं ॥

सर्व विश्वके ज्ञेय प्रति भासत जिन के ज्ञान में हैं॥ ४ ॥

विहर मान २० तीर्थंकर की लावनी ॥ ११ ॥

विहरमान जिन ढाई द्वीप में बीस सदाही राजतहैं ॥
तिन का दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत हैं॥

(टेक)

जंबूद्वीप में विदेह बत्तिस आठ आठ में एक जिनेश ॥
सदा विराजे रहें भवि जीवों को देते उपदेश ॥
सीमंधर युगमंदिर स्वामी बाहु सुबाहु श्री परमेश ॥
चारि जिनेश्वर कहे तिन के पद वंदन करों हमेश ॥
वर्तें चौथा काल जहां नित देव दुंदुभी बाजत हैं ॥
तिन का दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत हैं॥ १ ॥
धातुकी खंड द्वीप में विदेह हैं चौसाठि अरु बसु जिनराज॥
आठ २ में एक तीर्थंकर तिन में रहे विराज ॥
सुजात और स्वयंप्रभु ऋषभानन अनंत वीर्य महाराज ॥
विशाल सूरी प्रभू वज्र धर चंद्रानन राखो लाज ॥
छालिश गुण व्यवहार और निश्चय अनंत गुण छाजत हैं॥
तिन का दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत हैं॥ २ ॥
आधे पुष्करद्वीप में चौसाठि हैं विदेह अरु वसु जिन नाथ॥
तिनको सुर नर वहाँ पूजें हम भी यहाँ नावें मांथ ॥
चंद्रबाहु श्री भुजंग ईश्वर नेम प्रभू वीरसेन जी नाथ ॥
महाभद्र अरु देव यश अजित वीर्य पद जोड़ों हाथ ॥
जिन की प्रभा देख रवि शशि तारा नक्षत्र ग्रह लाजतहैं॥

तिन का दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजतहैं ॥ ३ ॥
ढाई द्वीप में एक सौ साठ विदेह तिन में तीर्थंकर बीस ॥
आठ २ में एक जिनवर राजें त्रिभुवनके ईश ॥
कोड़ि पूर्व सब आयु धनुष पांचसौ काय त्रय छत्तर शीश॥
दोनों ओरी अमर ढोरते चमर बत्तिसबत्तीस ॥
नाथूराम जिन भक्त जहां जिनवचन मेघ सम गाजत हैं ॥
तिन का वर्णन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत हैं ॥ ४ ॥

चौसडकी लावनी ॥ १२ ॥

चौरासी लख योनि में चौसड़ खेलत काल अनादि गया ॥
चारों गति के चार घर से न अभी तक पार भया ॥

(टेक)

देव धर्म गुरु रत्नत्रय तीनों काने विन पहिचाने ॥
आराधना चारों नहीं हिरदे में धरे चारों काने ॥
पंच महाव्रत पंजड़ी बिन नहीं पाया पंचम निज थाने ॥
षट मत छकड़ी के बोध बिन रहा अभी तक अज्ञाने ॥
पंच दुरी सत्ता के बोधबिन सत्ता का ना सत्त छया ॥
चारों गति के चार गति से न अभी तक पार भया ॥ १ ॥
पांच तीन अथवा छक्दो अट्ठाके विना जाने भाई ॥
वसु कर्म न नाशे नहीं वसु गुण विभूति अपनी पाई ॥
पाँच चार अथवा छ तीन जाने विन नव निधि बिनशाई॥
नव ग्रीवक जाके चतुर गति में फिर भ्रमण किया आई ॥
छ चारि दशविधि धर्म नजाना दशविधिपरिग्रह भार ठया॥

चारों गति के चारि घर से न अभीतक पार भया ॥ २ ॥
दश पौ ग्यारह के बिन जाने गुण स्थान ग्यारह चढ़के ॥
फिर गिरा अज्ञानी मोह वश सहे दुःख नाना चढ़के ॥
दश दो वा कच्चे बारह बिन जाने मोह भटसे अड़के ॥
बारम गुण थाने चढ़ा ना निज विभूति पाता लड़के ॥
पौ बारह के भेद विना ना तेरह विधि चारित्र लया ॥
चारों गति के चारि घर से न अभीतक पार भया ॥ ३ ॥
चौदह जीव समास चतुर्दश मार्गना नहीं पहिचानी ॥
इस कारण चौदह चढ़ाना गुणस्थान भ्रम बुधि ठानी ॥
पंद्रह योग प्रमाद न जाने तिनवश आश्रव रति मानी ॥
सोलह कारण के विना भायें न कर्म की थिति हानी ॥
सत्रह नेम विना जानें नाहिं पाली किंचित जीवदया ॥
चारों गति के चारि घर से न अभी तक पार भया ॥ ४ ॥
दोष अठारह रहित देव अरिहंत नहीं हिरदे आने ॥
इस हेतु अठारह दोष लगरहे नहीं अब तक हाने ॥
सम्यक रत्नत्रय पांसे अब सुगुरु दया से पहिचाने ॥
आठो विधि गोटें नाशि गुण आठ वरों धरके ध्याने ॥
नाथूराम जिन भक्त पार होने को करो उद्योग नया ॥
चारों गति के चारि घर से न अभी तक पार भया ॥ ५ ॥

उपदेशी लावनी ॥ १४ ॥

जग माणि नर भव पाय सयाने निज स्वरूप ध्याना चहिये॥
जब तक शिव ना तब तलक नित जिन गुण गाना चहिये॥

(टेक)

आर्य क्षेत्र रु श्रावक कुल लहि वृथा न डिहकाना चहिये ।
जप तप संयम नेम बिन नहीं काल जाना चहिये ॥
भ्रमे दीर्घ संसार न पाया पार चित लाना चहिये ॥
पुरुषार्थ को करो क्यों कायर बन जाना चहिये ॥
बार २ फिर मिले न अवसर यह शिक्षा माना चहिये ॥
जब तक शिव ना तब तलक नित जिन गुण गाना चहिये १॥
आप करो परणाम शुद्ध औरों के करवाना चहिये ॥
सदा धर्म में रहो लवलीन न बिसराना चहिये ॥
धर्म समान मित्र ना जग में यह उर में लाना चहिये ॥
अघ सम रिपु ना ताहि निज अंग न परसाना चहिये ॥
परदुःख देख हँसो मत मन में क्षमा भाव ठाना चहिये ॥
जब तक शिव ना तब तलक नित जिनगुण गाना चहिये २
साधर्मी लखि हर्ष करो उर मलिन भाव हाना चहिये ॥
अंगहीनको देखकर भूल न खिजवाना चाहिये ॥
निज परकी पहिचान करो इसमें होना दाना चहिये ॥
इसी ज्ञान बिन भ्रमे चिर अब निज पहिचाना चहिये ॥
दुःखी दरिद्री को दुःख देकर कभी न कलपाना चहिये ॥
जब तक शिव ना तब तलक नित जिन गुण गाना चाहिये।३
गुण वृद्धों की विनय करो नित मान विटप ढाना चहिये ।
पर विभूति को देख मन कभी न ललचाना चाहिये ॥
मिथ्यावचन कहो मत छल से सुकृत का लाना चहिये ।

सुर शिव सुख बहुतोंको दीना । जिन कीनी पद सेव ॥३॥
बार करत क्यों मेरी बारी । प्रभुजनकी सुधि लेव ॥
नाथूरामको धर्म पोत धर । भव सागरसे खेव॥ इति गौरी

प्रभाती ॥ १ ॥

चेत चिदानंद नाम भजले जिनवरका ॥ टेक ॥
ग़ाफिल मत रहो जीव, अब तक सोये सदीव ॥
अब तो दृग खोल; मार्ग देखो निज घर का ॥ १ ॥
पाया नर जन्म सार, अब जिय कुछ कर विचार ॥
बार बार पायबो दुर्लभा जन्म नर का ॥ २ ॥
जिन साना मित्र और, लखियत है किसी ठौर ॥
तात मात पुत्र मित्र सब कुटुम्ब जर का ॥ ३ ॥
अब तज सब अन्य काम, जिनवरका भजो नाम॥ ॥
यासे होय नाथूराम बासा शिवपुरका ॥ ४ ॥

प्रभाती ॥ २ ॥

जय जिनेश जय जिनेश जय जिनेश देवा ॥ टेक ॥
भवोदधि गहरो अपार, डूबत जन मांझ धार ॥
अबतो प्रभु कीजे पार सेवक का खेवा॥ १ ॥
थारे चरणार वृंद, अर्चंत सुर नर खगेंद्र ॥
गावत स्तुति मुनेंद्र पावत शिव मेवा ॥ २ ॥
थारे प्रभु गुण अनंत, गणधर नालहें अंत ॥
ध्यावत सब संत जान देवनके देवा ॥ ३ ॥
तज कर संसार बास, पावत शिवपुर निवास ॥

नाथूराम करे खास थारी जो सेवा,॥ ४ ॥

प्रभाती ॥ ३ ॥

भज मन जिनराज कार्य सिद्धि होय तेरा ॥ टेक ॥
निशि दिन जपिये जिनेंद्र, अर्चत जिनको शतेंद्र ॥
वंदत चरणारवृंद मेटत भव फेरा ॥ १ ॥
स्वार्थ बिन कृपादृष्टि, राखत प्रभु परमइष्ट,
जैसे भानु हरे सहज सृष्टिका अंधेरा ॥ २ ॥
याही भव बन मझार, भ्रमोजीवानंत वार ॥
प्रभु विन नालयो पार तज भव बसेरा ॥ ३ ॥
तजि अब जड़ जगति रीति, जिनवरसे करो प्रीति ॥
पाकर जिनमत पुनीत करो भव निवेरा ॥ ४ ॥
नाथूराम हो सुचेत, जिनवर से करो हेत ॥
जिनके पद कमल देत शिवपुर में डेरा ॥ ५ ॥

प्रभाती ॥ ४ ॥

मानो भगवंत वैन यही ऐन करनी (टेक)
हिंसा चोरी झूठ तजो, कुविसन मत भूल सजो ॥
निशि दिन प्रभु नाम भजो सुरति ना बिसरनी ॥ १ ॥
जुआ आदि पाप खेल तजो नशा दुष्ट मेल ॥
चलो नहीं पाप गैल सुख समाज हरनी ॥ २ ॥
दया सत्य वचन नीति, सज्जनसे करो प्रीति ॥
छोड़ो दुर्मति कुनीति सुक्ख की कतरनी ॥ ३ ॥
मन दे वच मानो हाल, यासे सुख हो त्रिकाल ॥

चाढ़े महिमा विशाला लहो सुयश धरनी ॥ ४ ॥
जैन भक्त नाथूराम, कहते यही सार काम ॥
यासे मिले परमधाम मिटे राह मरनी ॥ ५ ॥

सामन ॥ १ ॥

सामन आये चेतनि नहीं आये मोहे कुमति कुनारि ॥ (टेक)
पंच करण रस प्याय के, स्ववश किये कर प्यार ॥ १ ॥
घन वर्षत भीगी धरा, जलता हृदय हमार ॥ २ ॥
सुमति सदा मग जोवती, कब आवे भरतार ॥ ३ ॥
नाथूराम शोकित खड़ी, सुमति विरहके भार ॥ ४ ॥

सामन ॥ २ ॥

स्वामी तो हमारे गिरि चाढ़ि योगी भये, हमहू धरें तप सार
(टेक) पशु बंधन लखि नेमि जी, दया धरी अधिकार॥१॥
मुकुट पटकि कंकण तजे, वस्त्राभरण उतार ॥ २ ॥
राजुल प्रभु तट जाय के, ली दिक्षा सुखकार ॥ ३ ॥
नाथूराम धन्य रजमती, हेय गिना संसार ॥ ४ ॥

होली ॥ १ ॥

फाग रची जिन धाम स्वरंगी, भविजन मिल खेलत होरी।
(टेक)
अष्ट द्रव्य ले पूजत प्रभुको दाहत वसु कर्मन कोरी ॥ १ ॥
ज्ञान गुलाल लागिरहो अनूपम, गावत यश जिनवर कोरी२

निरख निरख छवि वीतरागकी झूक २नाचत पद ओरी॥३॥
नाथूराम जिनभक्त प्रभूसे मांगत फगुआ शिव गौरी ॥ ४ ॥

होली ॥ २ ॥

राजुल नेमसे होली खेले हर्ष उर धार ॥ (टेक)
परिग्रह पंक लगी अनादि से ताको हेय विचार ।
आतम अंग धोय सम्यक सर स्वच्छ किया अविकार ॥१॥
बारह व्रत भावना भूषण युत करके शील शृंगार ॥
सुमति सखी ले संग सयानी, निज रंग छिड़काति सार ॥२॥
ज्ञान गुलाल लगावति अनुपम, गावति बहु गुण गारि ॥
विविध विनय बाजित्र बजावति, अंत भरे स्वर तार ॥ ३ ॥
निज पद फगुआ माँगति प्रभुसे लखि के चित्त उदार ॥
नाथूराम जिन भक्त भाव से नचि२विविध प्रकार ॥ ४ ॥

उपदेशी पद ॥ १ ॥

चेतो प्राणी, शुभ मति भेरे । सुनि जिन वाणी, शुभ मति भेरे
(टेक)
मिथ्या तिमिर फटो प्रगटो रवि, सम्यक उर सुख दानी ॥शु०
स्वपर विवेक, भयो उर अंतर निज परणति पहिचानी॥शु०
सप्त तत्त्व जिन भाषित जाने, दृढ़ प्रतीति उर आनी ॥शुभ०
नाथूराम जिन भक्त शिवेच्छा, प्रगटी निज रस सानी॥शु०

तथा ॥ २ ॥

श्रीजिन वाणी, आनँद मेरे । शिव सुख दानी, आनँद मेरे॥

(टेक)

द्वादश सभा, भई सुन प्रफुलित, ज्यों चातक लखि पानी १
जाके सुनत, मिटामिथ्या तम। निजविभूतिपहिचानी॥आ०
जास प्रसाद, तरे अरु तारि हैं। तरत अभी भवि प्राणी॥आ०
नाथूराम जिन, भक्त सुनो नित। श्रवण धार श्रद्धाणी॥आ०

तथा ॥ ३ ॥

क्यों जिन वाणी, श्रवण न दैरे। उर न सुहानी, श्रवण न दैरे

(टेक)

जाविन तीन,काल त्रिभुवन में। रक्षक कोइन प्राणी॥ श्रवण०
नर्कत्रियंचन, के दुःख भूले। फिर तहां की रुचि ठानी॥श्र०
जा विन जीव, भ्रमें त्रिभुवन में। निज पुर राह न जानी॥श्र०
नाथूराम जिन भक्त सुनैना। शुभ शिक्षा अभिमानी॥श्र०

तथा ॥ ४ ॥

क्यों अभिमानी, दुर्मति भैरे। लखत न हानी। दुर्मति भैरे

(टेक)

परनारी दुर्गति की दाता। सो लाके गृह आनी॥दुर्मति०१
प्राण प्रतिष्ठा, धन वल नाशक। करै सुयश की हानी॥दुर्मति०
काल कूट भखि, जीवन चाहे। जड़ मति मूर्ख प्राणी॥दुर्मति०
नाथूराम क्यों चेतत नाहीं। सुन सतगुरुकी वाणी॥ दुर्मति०

उपदेशी भजन ॥ १ ॥

धरम भविहो, त्रिभुवन में सुखकार॥ (टेक)
दुर्गति नाशक, स्वपर प्रकाशक, भासक ज्ञेयाकार॥धर्म १॥

जिनवर कथित, क्षमादिक गुण युत, वसु विधि अरिहरतार
जास प्रसाद, अधम शिवपहुँचे, धर २ वर अवतार ॥ धर्म०
दर्शन ज्ञान, चरण सम्यक युत, नाथूराम उरधार । धर्म०४

पद ॥ १ ॥

लगोरी नेम प्रभू से प्रेम ॥ (टेक)
ऐसा दया निधिरे, और नहीं है हो । जैसे जगजिंपति नेम १
जग असार लखिरे, गृह त्यागा है हो । करी पशुन पर क्षेम २
विषय भोग येरे, दुःख दाता हैं हो । इनसे साता केम ॥३॥
नाथूराम अबरे, प्रभु तट जैहों हो । निज सुख पाऊं जेम४॥

तथा ॥ २ ॥

सखीरी नेनि शरण मैं तो जाऊं ॥ (टेक)
पशु बंधन लखिरे, गृह त्यागा है हो । उन तट केश लुँचाऊं १
अब तपके बलरे, अशुभ क्षिपै हों हो । त्रिय भव फेर न पाऊं२
तप सम जग मेंरे, और कहा है हो । तामें चित्त लगाऊं॥३
अब काहू विधिरे, ऐसा करि हों हो । नाथूराम शिव पाऊं४

तथा ॥ ३ ॥

प्रभूजी तुम देवन के देव ॥ (टेक)
चौ प्रकार केरे, देव कहे हैं हो । सो करते पद सेव ॥ १ ॥
देव पना है रे, सत्य तुम्ही में हो । नाहीं गुणों का छेव॥२॥
भवसागर कारे, पार नहीं है हो । धर्म पोत धर खेव ॥ ३ ॥
नाथूराम की रे, विनय यही है हो । प्रभुजनकी सुधि लेव४

तथा ॥ ४ ॥

मुझेहै यह विस्मय अधिकाय ॥ (टेक)

जा माया सेरे, तू हित चाहे हो। सो उलटी दुःखदाय ॥१॥

जाके भ्रम मेरे, तू व्रष भूलो हो। धर्म वचन न सुहाय॥२॥

या माया नेरे, बहुत ठगे हैं हो। नर्क दये पहुँचाय ॥ ३ ॥

नाथूराम क्यारे, चेत नहीं हैहो। दुर्लभ नर पर्याय ॥ ४ ॥

पद ॥ १ ॥

मैंतो दासी थारी नाथ मोकों क्यों विसारीरे ॥

दीजे नाथ दीक्षा रक्षा कीजिये हमारीरे ॥ (टेक)

प्राणपियारे,वचन तुम्हारे, श्रवण सुनत उपजत सुख भारीरे

बन पशु छोड़े, बंधन तोड़े, जग लखि हेय चढ़े गिरिनारीरे२

करुणा कीजे, यह यश लीजे, दीजे शिक्षा निज हितकारीरे३

रजमति प्यारी, दिक्षा धारी, नाथूराम सुरलोक सिधारीरे४॥

तथा ॥ २ ॥

पाये स्वामी मैं तो आज शिव सुखदानी रे ॥

दीजै नाथ शिक्षा इच्छा मनमें समानीरे ॥ (टेक)

जग हितकारी, बानि तुम्हारी, सहज विमल शीतल जिमि पानीरे ॥ १ ॥भव दुःख भारी, आप लखारी, ताको मैं प्रभु कहों क्या कहानी रे ॥ २ ॥ हे जगत्राता मैंटो असाता ॥ तुम पद सेय वरों शिवरानीरे ॥३ ॥ भव दुःख घाता, तुमही विधाता, नाथूराम श्रद्धा उर आनीरे ॥ ४ ॥

पद ॥ १ ॥

जो तुम को शिव आशा। बनो पंच परमपद दासा ॥ (टेक)
जिनके जपत नशत अघ सबही, फेर न आवतपासा ॥१॥
या पुद्गलका कौन भरोसा, होय क्षणक में नाशा ॥ २ ॥
सम्यक रत्न त्रय उर धारो, दाता शिवपुर बासा ॥ ३ ॥
नाथूराम जिन भक्त जपो नित, जब लग घट में श्वासा॥४॥

तथा ॥ २ ॥

इस जड़ तनु की क्या आशा। जो क्षण भंगुर यम ग्रासा॥
(टेक)
रज वीर्य से उत्पति जाकी, भरो रुधिर मल मांसा ॥ १ ॥
जल बुल बुल सम विनशत क्षण में, कौन भरोसा तासा २॥
या कारण नित पाप करत क्यों, दाता दुर्गति बासा ॥३॥
नाथूराम जो शिव सुख चाहे, हो जिनवर का दासा ॥४ ॥

पद ॥ १ ॥

शिव प्रिया को त्रिया निज जान के भवि कीजे हो यारी ॥
(टेक)
जन्मन मरन जरा गद क्षायक दायक निज सुख क्यारी ॥
हर्त्ता शोक वियोग की, कर्त्ता अविचल सुख अविकारी १॥
देह खेहसे नेह लगाके घर घर बना भिखारी ॥
निज सम्पति पति होत न भोंदू हाहा धिग मति थारी॥२॥
तीर्थपति यासे रति चाहत ऐसी अनूपम नारी ॥
शंकित कर्म कलंकित यासे संत जनों को प्यारी ॥ ३ ॥

नाथूराम जिन भक्त जगित ताजि याहि वरें धी धारी ॥
अविनाशी पद पावत सो ही तिन पद धोक हमारी ॥ ४ ॥

तथा ॥ २ ॥

वसु कर्म परमरिपु नाशिये शुभ पाई हो वारी ॥ (टेक)
एकेंद्री विकलत्रय आदिक काय असेनी सारी ॥
ज्ञान विना बल रंचनचालो मर मर भयो दुखारी ॥ १ ॥
नारक गति खोटी माति तामें रौद्र ध्यान अधिकारी ॥
पशु पक्षी कीटादि परस्पर घातक पापाचारी ॥ २ ॥
काल पाय कोई सुलटें पशु होंय अनुव्रत धारी ॥
तद्भव मुक्त होंयना तहांसे यासे दुःखिया भारी ॥ ३ ॥
भोग भूमियां सुर संयम बिन हैं निकाम अवतारी ॥
आर्य नर पर्याय सयाने भवोदधि तारण हारी ॥ ४ ॥
या तनु को सुरपाति ललचत हैं ताहि पाय नर नारी ॥
नाथूराम जिन भक्त करो तप तो परनो शिव प्यारी ॥ ५ ॥

तथा ॥ ३ ॥

जिन वचन रत्न उर धारिये शुभ सम्पाति हो भारी॥ (टेक)
काम धेनु सुर तरु चिंतामाणि चित्रावेलि विचारी ॥
एक जन्म इंद्री सुखदाता यह भव २ हितकारी ॥ १ ॥
दर्शन ज्ञान चरण सम्यक युत रत्नत्रय सुखकारी ॥
निज गुण युक्त सम्हारि धरो उर प्रेम सहित नर नारी॥२॥
जिन वच सार असार और वच भ्रम युत मायाचारी ॥
तिनको त्याग लाग शिव पथ से सुनि जिन ध्वनि धीधारी

नर भव रत्न द्वीप में बसके अब क्यों रहो भिखारी ॥
नाथूराम जिन भक्त शक्ति सम होउ नेम व्रत धारी ॥ ४ ॥

तथा ॥ ४ ॥

तनु क्षणभंगुर मल धाम है मति राचो धी धारी ॥ (टेक)
सप्तधातु उपधातु व्याधि से पूरण पिंड पिटारी ॥
नव मल छिद्र निरंतर श्रवते देखत घिन हो भारी ॥ १ ॥
तात शुक्र जननी रजसे यह प्रगट भया अव क्यारी ॥
अप गुण कूप भूप कुविसन का दुर्मति याको प्यारी ॥ २ ॥
अस्थि मांस का पिंड त्वचासे आच्छादित भ्रमकारी ॥
शृंगारादि वसन भूषण लखि मोहें शठ नर नारी ॥ ३ ॥
नाथूराम जिन भक्त शक्ति सम याहि पाय सुविचारी ॥
जप तप नेम करो निशिं वासर मानो विनय हमारी ॥ ४ ॥

तथा ॥ ५ ॥

मैं भव बन में चिरकाल से दुःख पाया हो भारी ॥ (टेक)
नित्य निगोद बसा अनादि से थावर काया धारी ॥
एक श्वास में जन्मन मरना किया अठारह बारी ॥ १ ॥
क्रम क्रम तनु विकल त्रय धरके भ्रमो पशू गति सारी ॥
पंच प्रकार सहा नारक दुःख बश बहु नर्क मझारी ॥ २ ॥
सुर गति में सम्यक्त विना नहीं तजी लेश्या कारी ॥
मनुष योनि मलेच्छ शूद्र हो भयो अभक्ष्याहारी ॥ ३ ॥
शुभ संयोग लहा श्रावक कुल अब यह विनय हमारी ॥
नाथूराम को दीजे प्रभुजी निज सेवा सुखकारी ॥ ४ ॥

तथा ॥ ६ ॥

जिन विषय विषम विष सम तजे धन्य वेही धी धारी ॥ (टेक)
करत अजान पान विष ता के प्राण हरत एक वारी ॥
ये खल प्रवल गरल वल पल २ हनत निगोद सुडारी ॥ १ ॥
इन वश जीव सदीव क्लीवहो आतम शक्ति विसारी ॥
पर परणति रति मान कुमाति लहि भयो कुगति अधिकारी
एक अक्षवश गज झख अलि मृग होत पतंग दुःखारी ॥
पंच करन मन धर सुर नर ये क्यों न भरें दुःख भारी॥३॥
ज्यों दव दहति लहाति अति ईंधन गहति न तोषक दारी ॥
त्यों इन चाह दाह पड़ प्राणी विकल अखिल संसारी ॥४॥
जो इन लीन मलीन क्षीण मति दीन सुहीनाचारी ॥
देह खेह का गेह येह तिन लागति नेह पिटारी ॥ ५ ॥
जिन इन भोग संयोग रोग का न्योग लखा सविकारी ॥
नाथूराम शिवभाम धाम सो वसे राम रमतारी ॥ ६ ॥

पद ॥ १ ॥

स्वामी जी वतादो शिवपुर की डगरिया मुझे तो वतादो शिवपुरकी डगरिया ॥ (टेक) भ्रमत २ चिरकाल व्यतीतो शिवपुर का पथ दृष्टि न परिया ॥ १ ॥ जाकारण वहु जीव सताये, भक्ति कुदेवन की वहु करिया ॥ २ ॥ अव कुछ काल लब्धि शुभ आई, श्रवण धरे जिन वच इस घरिया ॥ ३ ॥ नाथूराम जिनभक्त मिलेगी, निश्चय कर शिवप्रिया की नगरिया ॥ ४ ॥

तथा ॥ २ ॥

मुझे प्यारी लागे शिव प्रिया की नगरिया ॥ (टेक)
जन्म न मरण जरा गद वर्जित भूमि तहांकी ध्रुव सुख करिया।
जाकारण गृह तजि बसि बन में कष्ट सहत अति मुनि तप धरिया ॥ २ ॥
जाकी आश करत इंद्रादिक कब आवे शिव गमन की घरिया
नाथूराम जिन बचन धरो उर सहज मिले शिवपुरकीडगरिया

कहरवा ॥ १ ॥

आयाजी आयाजी आयाजी, मैं शरण तुम्हारे आयाजी(टेक)
लख चौरासी योनि में जी पाया बहुपाया बहु दुःख ॥ १ ॥
चारों गति दुःखधाम हैं जी कहीं नाहीं कहीं नाहीं सुख॥२॥
दीनानाथ दीनको तारो दयाकर दयाकर रुख ॥ ३ ॥
नाथूराम गया दुःख सबही देखा थारा देखा थारा मुख॥४॥

तथा ॥ २ ॥

तारो जी तारो जी तारो जी, मुझे बहियां पकड़ प्रभु तारो जी ॥ (टेक) यह भवसिंधु अतट अति गहरा डूवें प्राणी डूवें प्राणी गुप ॥ १ ॥ तारण तरण जान दृढ़ तुम ही तारो राख तारो राख उप ॥ २ ॥ मेरा दुःख जानत तुम सबही रहा नाहीं रहानाहीं छुप ॥ ३ ॥ नाथूराम भरोसेथारे बैठे स्वामी बैठे स्वामी चुप ॥ ४ ॥

पद ॥ १ ॥

श्री आदीश्वर जिनराज आज पति राखो जय २ जय स्वामी

अभक्ष्य भक्षण तजो चित शील में निज साना चहिये ॥
नाथूराम निज शक्ति प्रगट कर बनना शिव राना चहिये ॥
जब तक शिव ना तब तलक नित जिन गुण गाना चहिये॥

चंद्रगुप्तके १६ स्वप्नोंकी लावनी ॥ १५ ॥

सोलह स्वप्न लखे पिछली निशि चंद्रगुप्त नृप अचरजकार॥
भद्रबाहुने कहे तिनके फल सो वर्तते अबार ॥

(टेक)

सुर द्रुम शाखा भंग लखा सो क्षत्री मुनि व्रत नहीं धरें ॥
अस्त भानु से अंग द्वादश मुनि ना अभ्यास करें ॥
सुर विमान लौटत देखे चारण सुर खग ह्यां ना विचरें ॥
बारह फन के सर्प से बारह वर्ष अकाल परें ॥
सछिद्र शशि से जिन मत में बहु भेद होंय ना फेर लगार॥
भद्रबाहु ने कहे तिनके फल सो वर्तते अबार ॥ १ ॥
करि कारे युग लड़त लखे सो वांछित ना वर्षे जलधर ॥
अगिया चमकत लखा जिन धर्म महात्म रहेलघुतर ॥
सूखा सर दक्षिण दिशि तामें आया किंचित नीर नज़र ॥
तीर्थ क्षेत्र से उठे ध्रम दक्षिण में रहसी कुछ वर ॥
गज पर कपि आरूढ़ लखा कुल नीच नृपोंकाहो अधिकार।
भद्रबाहुने कहे तिनके फल सो वर्तते अबार ॥ २ ॥
हेमथाल में स्वान खीर खाता सो श्री ग्रह नीच रहै ॥
नृपसुत उष्ट्रारूढ़ सो मिथ्या मार्ग भूपगहै ॥
विगशित पद्म लखे कूंड़े में जैन धर्म कुल वैश्य गहै ॥

सागर सीमा तजी सो भूपति पंथ अनीतिलहै ॥
रथ में बच्छा जुते सो बालक पन में धारें वृषका भार ॥
भद्रबाहुने कहे तिनके फल सो वर्तते अवार ॥ ३ ॥
रत्न राशि रज से मैली सो यती परस्पर हो झगड़ा ॥
भूत नाचते लखे सो कु देव पूजन होय वड़ा ॥
इतनी सुन नृप चंद्रगुप्ति ने सुत सिंहासन दिया अड़ा ॥
आप दिगम्बर भया गुरु संग लगा तप करन कड़ा ॥
नाथूराम जिन भक्त कहे सोल स्वप्ने फल श्रुतानुसार ॥
भद्रबाहु ने कहे तिनके फल सो वर्तते अवार ॥ ४ ॥

राक्षस वंशीन की उत्पत्ति की लावनी ॥ १६ ॥

अजितनाथ के समय मेघवाहन राक्षस लंका पाई ॥
तिस का वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनँददाई ॥

(टेक)

विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी में चक्र वालपुर नग्र वसे ॥
नृप पूरण घन मेघ बाहन ताके शुभ पुत्र लसे ॥
तिलक नगर का नृपति सुलोचन सहस्रनयन सुत तातनसे।
कन्या उत्पलमती दोनों जन्मे सुंदर उन से ॥

चौपाई ॥

उत्पल मती पूर्ण घन जाय।निज सुत को जांची मनलाय॥
वचन निमित्ती के सुन राय। दई सगर को सो हरषाय ॥

दोहा।

तब पूरण घन सेनले, हना सुलोचन राय।

सहस्र नयन ले वहिन को, छिपा विपिनमें धाय ॥
पूरणघन ने कन्या की खातिर नगरी सब ढुँढ़वाई ॥
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनंददाई ॥ १ ॥
सगर चक्रपति को इक दिन माया मय हय ने हरा सही ॥
धरा विपिन में वहीं लखि उत्पल मती भ्रात से कही ॥
चक्री के तट सहस्र नयन ने जाय वहिन परनाय वही ॥
अति आदर से युगल श्रेणीकी पाई आप मही ॥

चौपाई ।

सहस्र नयन चक्री बल पाके । पूरण घन मारा रण धाके ॥
भगा मेघ वाहन घबराके । समव शरण में पहुँचा जाके ॥

दोहा ॥

अजित नाथको वंदि के, बैठा समता ठान ।
सहस्र नयन के भट तहां, देख गये निज थान ॥
तिन के मुख सुन सहस्र नयन भी गया जहां जित जिनराई
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनंददाई ॥ २ ॥
समोशरण में जाय भवान्तर पूछि सभी निर्वैर ठये ॥
यह सुन राक्षस इंद्र प्रमुदित मन भीम सुभीम भये ॥
कहा मेघवाहन से धन्य तू अब तेरे सब दुःख गये ॥
श्री जिन वर के चरण तल जो तेरे वसु अंग नये ॥

चौपाई ।

हम प्रसन्न तो पर खगराय । सुनो वचन मेरे मन लाय ॥
राक्षस द्वीप बसो तुम जाय। वह भू तुमको अति सुखदाय॥

दोहा ।

लवणोदधिके मध्य है , राक्षस द्वीप प्रधान ॥
लंबा चौड़ा सातसौ, योजन तास प्रमाण ॥
सब द्वीपोंमें द्वीप शिरोमणि जासु कीर्ति जगमें छाई ॥
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनंददाई ॥ ३ ॥
ताके मध्य त्रिकूटाचल योजन पचास ताका विस्तार ॥
ऊंचा योजन कहा नव तास तले नगरी सुखकार ॥
लंका योजन तीस तहां जिन भवन बने चौरासी सार ॥
सपरिवार से तहां निवसो तुम अरि गण का भयटार ॥

चौपाई ।

अरु पाताल लंक शुभ थान । ठौरशरण का है सु प्रधान ॥
छः योजन ओंड़ा परवान । है सुंदर स्थान महान ॥

दोहा ।

इक शत साढ़े तीसइक १३१ ॥ डेढ़ कला विस्तार ॥
यह कहि निज विद्यादई , अरु रत्नोंका हार ॥
बसे मेघवाहन तहां जाके कुटुम सहित तहां हर्षाई ॥
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनंददाई ॥ ४ ॥
ता राक्षस कुल में असंख्य नृप भये सो निजकरणीअनुसार।
कोई शिवपुर गये किनही सुरके सुख लिये अपार
कोई पाप कर गये अधोगति भ्रमतभये चउ गति दुःखकार
मुनि सुव्रत के समय में विद्युतकेश भये नृप सार ॥

चौपाई।

तिनके पुत्र सुकेश सुजान। इंद्रानी तिसके त्रिय जान॥
तीन पुत्र ताके गुणवान। भये सुवीर महाबलवान॥

दोहा।

माली और सुमाली अरु, माल्यवान तिन नाम।
सुमालीके रत्नश्रवा, पुत्र भया गुणधाम॥
भई केकसी रानी ताके जासु कीर्ति जगमें गाई॥
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणोंको आनंददाई॥ ५॥
रत्नश्रवा त्रिय केकसी के सुत तीन महा बलवान भये॥
पहिला रावण दुतिय सुत कुंभकरण गुणधाम ठये॥
त्रितिय विभीषण कुलके भूषण जिनने शुभगुण सर्व लये॥
तीनों योद्धा अनूपम तिनको भूप अनेक नये॥

चौपाई।

शूर्पनखा तिन बहिन प्रधान। भई अनूपम रूप महान॥
खर दूषण परनी बुधिवान। बसे लंक पाताल सुजान॥

दोहा।

राक्षस द्वीप विषे बसे, विद्याधर गुणधाम।
यह वर्णन संक्षेप से, कहा सु.नाथूराम॥
पल भक्षक राक्षस ये नाहीं नर पवित्र जानो भाई॥
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनंददाई॥ ६॥

वानरवंशीनकी उत्पति की लावनी ॥ १७॥

वानर वंशिन की जैसे उत्पत्ति भई सो सुनो श्रवन॥

जिन शासन का लहों आधार न कल्पित कहों वचन ॥

(टेक)

विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी मेघपुर तहां खगपति शुभ नाम ॥
अतींद्रराजा पुत्र श्रीकंठ मनोहरा कन्या धाम ॥
तहीं रत्नपुर नृप पुष्पोत्तर पद्मोत्तर ता सुत अभिराम ॥
कन्याताके एक पद्माभा मनु सुरपति की भाम ॥

चौपाई ॥

मनोहरा पुष्पोत्तर राय । निज सुत को जांची उमगाय ॥
श्रीकंठ कन्या के भाय । दई न ताको मने कराय ॥

दोहा ।

धवलकीर्ति लंका धनी, राक्षस वंशी भूप ॥
व्याही ताहि मनोहरा, लखि के अधिक अनूप ॥
पुष्पोत्तर खग श्रवण सुनत यह बहुत उदासी मानी मन ॥
जिन शासन का लहों आधार न कल्पित कहों वचन ॥१॥
एक दिना श्रीकंठ वंदना सुमेरुकी कर आते घर ॥
पद्माभाका राग सुन मोहित हो तिहि लीनी हर ॥
सुनत कुटुम जन तभी पुकारे पुष्पोत्तरको दई खबर ॥
क्रोधित होके तभी खग चढ़ा सेन ले ता ऊपर ॥

चौपाई ।

श्रीकंठ लंकाको धाया । धवलकीर्ति लखि अति हर्षाया ॥
सेन लिये तौलों खग आया । धवलकीर्ति सुन दूत पठाया ॥

दोहा।

पुष्पोत्तर को तासने समझाया बहु भाय।
अरु पद्माभाकी सखी, गई कही तहां जाय॥
तात दोष ना श्रीकंठका वरा मैं ही याको आपन॥
जिन शासनका लहों आधार न कल्पित कहों वचन॥२॥
लौटगया खग कीर्तिधवल तब श्रीकंठको प्रीति दिखाय॥
निवास करने वानर द्वीप तिन्हें दीना शुभराय॥
श्रीकंठ तहां गये बसाया नग्र किहकपुर अति सुखदाय॥
वानर देखे तहां बहु केलि करत नाना अधिकाय॥

चौपाई।

तिनने कपि पाले रुचि ठान। तिनसे क्रीड़ा करत महान॥
रचे चित्र तिनके गृह स्थान। रंग २ के लखि सुखदान॥

दोहा।

ता पाछे बहु नृप भये, तिनभी कपिके चित्र॥
मंगलीक कारज विषे, थापे जान पवित्र॥
वास पूज्यके समय अमर प्रभु भये भूपसो सुनो कथन॥
जिन शासनका लहों आधार न कल्पित कहों वचन॥३॥
तिनकी रानी डरी भयंकर देख चित्र कपिके तब राय॥
ध्वजा मुकुटमें कराये चित्र ग्रेहके दये मिटाय॥
तबसे ये कपिकेतु कहाये कपि वंशी उत्पतियों आय॥
वानर नाहीं नृपति नर विद्याधर हैं जानो भाय॥

चौपाई।

ता कुलमें बहु नृप गुणधाम। भये कहां तक लीजे नाम॥
फेर महोदधि नृप अभिराम। भये अनूपम ताही ठाम॥

दोहा।

तिनके सुत प्रतिचंद्रके, दोयपुत्र अतिधीर॥
भये प्रथम किहकंद अरु, छोटा अंधक वीर॥
तिन्हे राज प्रतिचंद्र देय व्रत लेय गये तप करने वन॥
जिन शासनका लहों आधार न कल्पित कहों वचन॥४॥
एक दिना विजयार्द्ध पर आदित्यपुरके विद्याधरने॥
नृपति बुलाये स्वयंवर मंडप में कन्या वरने॥
नृप किहकंद श्री मालाने तहां प्रेम धरके परने॥
रथनूपुरका ईश लखि विजयसिंह लागा जरने॥

चौपाई।

भया परस्पर युद्ध महान। अंधकने करगहि धनु बान॥
विजयसिंह मारा शरतान। भगी सेन ताकी तजि थान॥

दोहा।

असनवेग ताका पिता, सुनत चढ़ा ले सेन॥
तव वानर वंशी भगे। सन्मुख तहां रहेन॥
असनवेग ने घेर किहकपुर कपिवंशिनसे कीना रन॥
जिन शासन का लहों आधार न कल्पित कहों वचन॥५॥
असनवेग का सुत विद्युतवाहन किहकंद लड़े ले बाण॥
असनवेगने तहां मारा अंधक दारुण रण ठान॥

विद्युतवाहनने किहकंद किया घायल मारी सिलतान ॥
मूर्छा खाके भूमि पर गिरा मगर ना निकले प्राण ॥

चौपाई ।

तब लंकेश सुकेश उठाय । रखा किहकपुर में सो आय ॥
फिर पाताल लंकमें जाय । छिपे सर्व ही प्राण बचाय ॥

दोहा ।

असनवेग तब सेन ले, लौट गया निजथान ॥
फिर उदास हो भोगसे, धारातप बुधिवान ॥
सहस्रार पुत्रको राज तिन दिया किया निज वास विपन ॥
जिन शासन का लहों आधार न कल्पित कहों वचन॥६॥
सहस्रार ने लंकामें निर्घात सुभट राखा ताने ॥
सहस्रारके भया सुत इंद्र नाम राखा वाने ॥
सूर्यरज ऋक्षरज भये किहकंदके दो सुत गुण स्याने ॥
नग्र बसाके बसे किहकंदपुर के तब दरम्याने ॥

चौपाई ।

सूर्य रजके दो सुत भये । नाम वालि सुग्रीव सुलये ॥
ऋक्ष रज के भी दोसुत ठये । नल अरु नील नामतिनदये।

दोहा ।

निवसे वानर द्वीपमें, यासे कपि कुल नाम ॥
ये वन पशु वानर नहीं, विद्याधर गुणधाम ॥
विद्याके बल चढ़ि विमानमें करें सर्वठां गगण गमन ॥
जिन शासनका लहों आधार न कल्पित कहों वचन ॥७॥

लंकापति राक्षस सुकेत के तीन पुत्र उपजे गुणखान ॥
माली सुमाली और लघु मालयवान रूपके निधान ॥
मालीने निर्घात सुभट को मार लिया लंका निज थान ॥
फिर मालीको इंद्र विद्याधरने मारा रण म्यान ॥

चौपाई।

सुमालीके सुत रत्नश्रवाके। भये तीन सुत अतिबलवाँके ॥
रावण आदि तिन्होंने जाके। बांधा इंद्र समरमें धाके ॥

दोहा।

रथनूपुर पति इंद्र यह, विद्याधर नरनाथ ॥
नहीं इंद्र सुरलोकका, हारा रावण साथ ॥
नाथूराम वानर वंशिनकी कही कथा यह मनभावन ॥
जिन शासनका लहों आधार न कल्पित कहों वचन ॥८॥

चौवीस तीर्थंकरकी लावनी ॥ १८ ॥

कीजै नाथ सनाथ जान निज युग चरणनका दास प्रभू ॥
दीजी जै मुक्ति रसाल काटि विधि जाल रखो निजपासप्रभू।

(टेक)

प्रथम नमों आदीश्वरको हुए आदि तीर्थ कर्तार प्रभू ॥
आदि जिनेश्वर आदीश्वरजी शिव रमनी भर्त्तार प्रभू ॥
अजितनाथ जीते अजीत वसु दुष्ट कर्म किये क्षार प्रभू ॥
तारण तरण जहाज नाथ किये भक्त भवोदधि पारप्रभू ॥
सम्भवनाथ गाथ गुण प्रगटे सम्भ्रम मेंटनहार प्रभू ॥
ज्ञानभानु अज्ञान तिमर हर तीन जगतिमें सार प्रभू ॥

चौपाई ।

अभिनंदन अभिमान विदारो । मार्दव गुण हिरदे विस्तारो ।
ज्ञानचक्र प्रभु जब कर धारो। मोह मल्लरिपु क्षणमें मारो॥

दोहा ।

सुमति नाथ प्रभु सुमतिपति , करो कुमति ममनाश ॥
सुमति देहु निज दासको , अनुभव भानु प्रकाश ॥
पद्मप्रभुके पद्मचरण हिरदेमें करो मम वास प्रभू ॥
दीजे मुक्ति रसाल काटि विधि जाल रखो निज पास प्रभू ॥
नाथ सुपारस निज पारसप्रभु जन्म वनारस लीनाजी ॥
सम्मेदा गिरिवर पै ध्यानधर वसु अरिको क्षय कीनाजी ॥
चंद्र प्रभुके चरण कमलकी क्रांति देख शशि हीनाजी ॥
महासेनके लाल नवाऊं भाल परम सुख दीनाजी ॥
पुष्पदंत महाराज रखो मम लाज समर करो क्षीणाजी ॥
शील शिरोमणि देव करों तुम सेव सफल मम जीनाजी ॥

चौपाई ।

शीतल नाथ शील सुखधाम।सिद्धि करो मन वांछितकाम॥
श्रेयान्स श्रीपति गुण ग्राम । जपों नाम थारो वसुजाम ॥

दोहा ।

वासु पूज्यके पूज्यपद , वसो हृदय मम आन॥
विमल नाथ कलिमल हरो , करो विमल कल्याण ॥
अनंत नाथ दीजै अनंत सुख यह पुजवो मम आश प्रभू ॥
दीजै मुक्ति रसाल काटि विधि जालरखो निज पास प्रभू ॥

धर्मनाथ प्रभु धर्म धुरंधर धर्म तीर्थ करतार प्रभू ॥
प्रगट धर्म जहाज नाथ किये भक्त भवोदधिपार प्रभू ॥
शांति नाथ प्रभु शांति गुणो निधि काम क्रोध किये क्षार प्रभू॥
दयासिंधु त्रिभुवनके नायक दुःख दरिद्र हरतार प्रभू ॥
कुंथु नाथ कुंथू गज सम जीवन के रक्षण हार प्रभू ॥
अधमोद्धारक भवोदधि तारक देनहार सुखसार प्रभू ॥

चौपाई ।

अरहनाथ अरि कीने चूरि । जिनके वचन सुधारस मूरि ॥
मल्ल नाथ मल्लनमें भूरि । काम मल्ल हनि कीना दूरि ॥

दोहा ।

मुनि सुव्रत महाराज जी , प्रभु अनाथ के नाथ ॥
कार्य सिद्धि मम कीजिये , नमों जोड़ युग हाथ ॥
निमि प्रभु दीन दयाल मिटादो भव अरण्यका राश प्रभू ॥
दीजै मुक्ति रसाल काटि विधिजाल रखो निज पास प्रभू ३।
समुद्र विजय सुत नेमि गुणोयुत राजमती के कंत प्रभू ॥
यदुकुल तिलक शरण अशरणको देनहार सुख संत प्रभू ।
पारसनाथ बाल ब्रह्मचारी तप धारी सो महंत प्रभू ॥
नाग नागनी जरत उबारे दे निज मंत्र तुरंत प्रभू ॥
महावीर महाधीर महारिपुकर्मोंका किया अंत प्रभू ॥
पावापुर से मुक्ति पधारे हो अंतम अरहंत प्रभू ॥

चौपाई ।

तीन काल के जिन चौबीस । त्रिविधि शुद्ध ध्याऊं जगदीश॥

कार्य सिद्धि कीजै मम ईश । युगल चरण में नाऊं शीश ॥

दोहा ।

हाथ जोड़ विनती करों, नाथ ग़रीब निवाज़ ॥
लाज रहै जो दास की, कीजे वही इलाज ॥
नाथूराम की अर्ज़ यही करदो वसु अरिका नाश प्रभू ॥
दीजै मुक्ति रसाल काटि विधि जाल रखो निज पास प्रभू॥४॥

जिन भजन का उपदेश म् की दुअंग लावनी ॥ १९ ॥

मन वच काय जपो निशि वासर चौबीसों जिन देव का नाम॥
मंगल करन हरन अघ आरति घाता विधि दाता शिवधाम॥

(टेक)

मोह महाभट जगतमें नट खट ताके पड़ा वश आतम राम॥
मगन विषय सुख में निशि वासर नहीं खबर निज आठो जाम
मूढ़ कुमति से प्रीति लगाके मित्र बनाये क्रोध रु काम ॥
महत्व अपना भूल गया शठ जाना रूप निज हाड़रु चाम॥
महंद्भक्ति करेना जड़मति जासे मिले अनुपम शिव भाम ॥
मंगलकरन हरन अघ आरति घाता विधि दाता शिव धाम १॥
मदन के वश रस विषयको चाहे दाहे सुगुण निज मूढ़ तमाम
माने ना शिक्षा गुरु जगकी दुर्गति को करता व्यायाम ॥
मद्य मांसको सप्रेम सेवे जैसे दरिद्री शीत में घाम ॥
माया लीन ठगे दीनों को फिर कुविसन में खोवे दाम ॥
मतिमानों की करे न संगति जासे बसे अविनाशी ठाम ॥
मंगल करन हरन अघ आरति घाता विधि दाता शिव धाम२

मात तात सुत भ्रात मित्र त्रिय दासी दास अर्द्धंगी भाम ॥
माने मोह वश अपने इनको वो बमूल शठ चाहे आम ॥
मेरी मेरी करता निशि दिन नहीं लहे क्षण भर विश्राम ॥
मोत फिरे शिर पर निशि वासर नहीं करै क्षण एकविराम।
महा मूढ़ प्रभु नाम न जपता जिस्से लहे अविचल आराम॥
मंगलकरन हरन अघ आरति घाताविधिदाताशिवधाम॥३॥
मिथ्या मार्ग चले आप शठ कर्मों को देता इलजाम ॥
मूल तत्त्व श्रद्धाण न करता इस्से अधोगति करे मुक़ाम ॥
मानो सुधी यह सीख सुगुरु की स्वपर भेद में रहो न खाम
मिले न फिर पर्याय मनुज की करो शुद्ध यासे परणाम ॥
मद आठो को टार धार उर नाम प्रभूका नाथूराम ॥
मंगलकरन हरन अघ आरति घाता विधि दाताशिवधाम४॥

जिन प्रतिमा की स्तुति लावनी ॥ २० ॥

ध्यानारूढ़ वीतरागी छवि परम दिगम्बर श्री जिनेश ॥
महापवित्र मूर्ति श्रीजिनकी त्रिभुवनपति पूजते हमेश ॥
(टेक)
जैसे राग कामी को बढ़ावे-हाव भाव युत त्रिय का चित्र॥
भय घिन उपजे देखत मूर्ति सिंह मलेच्छ महा अपवित्र ॥
तैसे भाव वैराग बढ़ावे परम दिगम्बर मूर्ति विचित्र ॥
क्षमाशील संतोष होंय दृढ़ देखत श्रीजिन मूर्ति पवित्र ॥
कृत्या कृत्यम मूर्ति पूज्य सब नहीं परिग्रह जिनके लेश ॥
महापवित्र मूर्ति श्रीजिनकी त्रिभुवनपति पूजते हमेश ॥१॥

चतुरन काय देव नर खगपति जिन मूर्ति को करें प्रणाम॥
मन वच काय भाव श्रद्धायुत वंदत प्रभु छवि आ जिनधाम
ऐसी मूर्ति पूज्य श्री जिनकी महापुरुष वंदें वसु जाम ॥
तिनकी जो शठ निंदा करते अपराधी तिनका मुँह श्याम॥
जिनवर तुल्य मूर्ति श्री जिनकी यही पुराणों में आदेश ॥
महापवित्र मूर्ति श्री जिनकी त्रिभुवनपति पूजते हमेश२॥
अधमकाल की यह विचित्र गति बड़े दुष्ट पापी स्थूल ॥
मिथ्या ग्रंथ बनाय पाप मय धर्म ग्रंथोंका काटत मूल ॥
जैनी हो जिन वचन न मानें है मुखार उन के में धूल ॥
जिन मूर्ति की निंदा करतें आम्र काज बोवते बंबूल ॥
महा नरक की सहें वेदना पर भव में ऐसे मूढ़ेश ॥
महापवित्र मूर्ति श्री जिनकी त्रिभुवनपति पूजते हमेश॥३॥
हैं प्रत्यक्ष मूर्ति जड़ सबही · किंतु पूज्य जिन का आकार॥
राग द्वैष परिग्रह ना जिनके क्षमा शील लक्षणयुत सार ॥
वस्त्र शस्त्र आभरण विलेपन कौतूहल नाना शृंगार ॥
काम क्रोध लक्षण युत मूर्ति सो अवश्य पूजना असार ॥
नाथूराम कहें जड़तो शास्त्रभी किंतु पूज्य जिन वचन विशेष
महापवित्र मूर्ति श्री जिनकी त्रिभुवन पति पूजते हमेश॥४॥

कलियुगकी लावनी ॥ २१ ॥

कलियुग का करों व्यान वक्त जब से कलियुग का आयाहै॥
हुआ दुखी संसार पाप से पाप जगत में छाया है ॥

(टेक)

धरा योग तज भोग भई छवि परम हंस मूर्ति स्वयमेव ॥
वीतराग जिनदेव दिगम्बर तिन्हें कहें शठ नंगा देव ॥
आप लिंग संकर का उमा की पूजें भग नर त्रिय कर सेव ॥
तिन्हें न नंगा कहें महानिर्लज्ज दुष्टों की देखो टेव ॥
शिव भक्तों के उरमें उमा की भग शिव लिंग समाया है ॥
हुआ दुखी संसार पाप से पाप जगत में छाया है ॥ १ ॥
वीतराग हैं नग्न मगर मस्तक पद तिनके पूजें परम ॥
महादेव का लिंग पूजें जो नाम लिये आती है शरम ॥
वड़े सोच की वात दुष्ट शठ आपतो ये वद करें करम ॥
वीतराग की निंदा करते जो जग में उत्कृष्ट धरम ॥
भई प्रगट मति भ्रष्ट जिन ने स्त्रिन से लिंग पुजाया है ॥
हुआ दुखी संसार पाप से पाप जगत में छाया है ॥ २ ॥
देख तिलोत्तमा रूप वदन ब्रह्माने काम वश कीन्हें पांच ॥
धर नितम्ब शिर हाथ शंभु ने किया गवरके आगे नांच ॥
धरें नारिका रूप कृष्णजी फिर विरज में खोलें कांच ॥
तज धोती लिया पहिन घांगरा लिखा भागवत में लो वांच॥
महाकामके धाम तीनों ऐसा पुराणों में गाया है ॥
हुआ दुखी संसार पाप से पाप जगत में छाया है ॥ ३ ॥
लोभ पाप का वाप जिस ने ब्राह्मण के घर कीना है वास॥
मिथ्या ग्रंथ वनाय धर्मशास्त्रों का कर दीना है नाश ॥
भक्ति ज्ञान वैराग की तज कामी जो मति हीना हैं खास ॥

कहें भक्ति भोगोंमें विषय पोषण को नाम लीना है तास ॥
ईश्वरका ले नाम भोग कर पुष्ट करें निज काया है ॥
हुआ दुखी संसार पापसे पाप जगत में छाया है ॥ ४ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों ये काम क्रोध मायाके धाम ॥
वीतराग तीनोंसे वर्जित शुद्ध सार्थिक जिनका नाम ॥
पक्षपात तजि कहो धर्मसे इनमें कौन पूजनके काम ॥
वीतराग या हरि हर ब्रह्मा कहें सभामें नाथूराम ॥
दुष्टोंका अभिमान हरन को यह शुभ छंद बनाया है ॥
हुआ दुःखी संसार पापसे पाप जगत में छाया है ॥ ५ ॥

शाखी ।

धन्य २ जिनवर देव जिनने निज धर्म प्रकाशा ॥
जिसकी सुर नर पशु भवि के सुनने की आशा ॥
धरे पंच कल्याण भेद सब सुनो खुलाशा ॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान किया निर्वाण में वासा ॥

दौड़ ।

भव्य ये सार पंच कल्याण । धरें जो चौवीसौं भगवान ॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान रु निर्वाण। सुरासुर पूजें तज अभिमान॥
जिनके सुनने से होय वर बुद्ध। नाथूराम पावो शिव मग शुद्ध॥

ऋषभनाथके पंचकल्याणकी लावनी ॥ २२ ॥

नाभिनंदन तजि सदन चले वन शिव रमनीको वरन ॥
आदि प्रभु प्रगटे तारण तरण जी ॥

(टेक)

प्रथम गर्भसे मास द्विगुण त्रय भई रत्नोंकी वृष्टि ॥
पंचदश मास अवधिकी सृष्टिजी॥हूंठ कोड़ि त्रयवार रत्न ॥
शुभ वर्षत आये दृष्टि ॥ करें संशय सुन मूढ़ निकृष्टजी ॥

दोहा ।

इंद्र हुक्मसे धनदने, रची अवधि जिमि स्वर्ग ॥
नव द्वादश योजन तनी, तामधि उत्तम दुर्ग ॥
कूप वापी तड़ाग बहुवरण।आदिप्रभुप्रगटेतारणतरणजी १॥
त्रिविध ज्ञानसंयुक्त जन्मलिया मरुदेवीके लाल ।
मुकुट हरिका कंपातत्कालजी ॥
साढ़ेबारह कोटि जातिके तूर बजे सब हाल ॥
सप्त डग चल नाया हरि भालजी ॥

दोहा ।

इंद्र चले सुर साथले, करन जन्म कल्याण ॥
करत शब्द सुर गगनमें, जय जय जय भगवान ॥
नाथ तुम शोभित कीनी धरन॥आदिप्रभु प्रगटे तारण० २॥
तीन प्रदक्षिणा दई नग्रकी इंद्र सुरोंके साथ ।
फेर तहांगये जहां जिन नाथजी । इंद्रानी हरि हुक्म लिआई
जिनवरको निजहाथ । देख दर्शन नाया हरि माथजी ॥

दोहा ।

निरखि रूप भगवानका, तृप्त हुवा ना इंद्र ॥
तब सुरेंद्र दृग सहस्र कर, देखे आदि जिनेंद्र ॥

नवाया मस्तक प्रभुके चरण।आदि प्रभु प्रगटे तारण० ३॥
प्रथम इंद्रने लिये नाथ तब द्वितिय इंद्र ईशान ॥
छत्र शिरधारा प्रभुके आनजी ॥ सनत्कुमार महेंद्र चमर
दोऊ ढोरें इंद्र सुजान । शेप सुर करें जय जय भगवानजी॥

दोहा।

नृत्य करें देवांगना, बाजें बहु विधि तूर ॥
चले जांय सुर गगणके, बीच शब्द रहा पूर ॥
जाहि सुन आनँद पाते करन ॥ आदि प्रभु प्रगटे० ॥४॥
गिरि सुमेरु पर पांडुक वनमें पांडु शिलापरं जाय ॥
इंद्रने दिये नाथ पधरायजी । क्षीरोदधिसे नीर हेमघट ॥
एक सहस्र वसु ल्यांय । सुरोंने अन्हवाये जिन रायजी ॥

दोहा।

एक चारि वसु जानिये, योजन कलश प्रमाण ।
सो ढारे जिन राजपर । हर्ष सुरोंने ठान । नाथको पहिरा-
ये आभरण ॥ आदि प्रभु प्रगटे तारण० ॥ ५ ॥
इस विधि कलशऽभिपेक इंद्र कर अवधि पुरीमें आय ॥
नाभि नृपको सोंपे जिन रायजी ॥वृषभनाथ कहि नाय इंद्रने
स्तुति मुखसे गांय ॥ शची युत भक्ति करी मनलायजी ॥

दोहा।

अमी अँगूठा मेलके, इंद्र नाय निज शीश ॥
दे अशीश गृह को गये, जयवंते हो ईश ॥
अवधियें हर्ष हुआ घर घरन।आदि प्रभु प्रगटे तारण०॥६॥

लाख तिरेसठ पूर्व राज कर तब प्रभु भये उदास । तुरत लौकांतिक सुर आपास जी । स्तुति कर गृह गये शेषसुर इंद्र प्रभूके दास । रची शिवका प्रभुको सुखराशिजी ॥

दोहा ।

तामें प्रभु आरूढ़ हो, गये तपो वन नाथ ।
वस्त्राभरण उतार के, लुंचि केश निज हाथ ॥
तहांतप लागे दुर्द्धरकरन ॥ आदि प्रभु प्रगटे तारण० ॥ ७ ॥
कर तप घोर जिनेश हने खल चारि घातिया कर्म ॥
ज्ञान तहां उपजा पंचम पर्म जी । समोशरण हरि रचा प्रकाशा जहां प्रभुने निज धर्म । मिटाया भवि जीवों का भर्म जी ॥

दोहा ।

देश सहस्र बत्तीस में, कीना नाथ विहार ॥
अष्टापद से शिव गये, हनि अघातियाचार ॥
नाथूराम जहां न जन्मन मरन ॥ आदिप्रभु प्रगटे तारण० ८

मूर्ख जैनीकी लावनी ॥ २३ ॥

जिन मत पाय विपर्यय वर्तें क्या जिनमत पाया ॥
जिन्हें खल कुगुरुन बिहकाया जी ॥

(टेक)

नर पर्याय पाय श्रावक कुल आर्य क्षेत्र प्रधान ॥ मिला दुर्लभ जिन वृषशुभ आनजी । चलें चालि विपरीति ॥ कुगुरु शिक्षा पर कर श्रद्धान । सुनो वर्णन तिसका धर ध्यानजी ॥

दोहा।

वीतराग छवि शुद्ध को, चंदनादि लपटाय।
परिग्रह धारी गुरुन की, करत सेव अधिकाय॥
कहें गुरु भाग्यनि से पाया। जिन्हें खल कुगुरुन विहकायाजी
जो कुलका आचार उसी को मानत धर्म अजान॥
नाम को करें पुण्य अरु दान जी॥ लंघन को उपवास
मानते विनातत्त्व श्रद्धाण। वृथा तन कष्ट सहें अज्ञानजी॥

दोहा।

चर्बी की ले बत्तियां, जिन गृह में अधिकाय॥
जालत अति उत्साह से, पोषत विषय अघाय॥
हृदय में अहंकार छाया। जिन्हें खल कुगुरुन विहकायाजी२
हरित फूल फल कर्पूरादिक जो हैं वस्तु सचित्त।
करें जिन पूजा तिनसे नित्तजी। जैनी बन शठ पाप
पंथमें अधिकलगाते चित्त। चाहते तिससे अपना हित्तजी॥

दोहा।

फूल माल जिन नाम की, करते शठ नीलाम॥
नाम वरी को उमंगके, बढ़बढ़ बोलत दाम॥
अंधेरा विन विवेक छाया। जिन्हें खल कुगुरुन विहका
याजी३ बीच सभा में आप की पगड़ी लेय उतार। फेर
बेचे तिस को उच्चार जी। तहां कोई बहु दाम बढ़ा के लेय
आप शिरधार। विना आज्ञा तुम्हरी उस बार जी॥

दोहा ।

तिस पर कैसे करेंगे, आप तहां परणाम ॥
द्वैष रूप या हर्ष मय, सोचि कहो इस ठाम ॥
न्याय का अवसर यह आया । जिन्हें खल कुगुरुन विंहकाया जी ॥४॥ ना देवाला कढ़ा प्रभू का जिसको बेचत माल ॥ नहीं कुछहैं जिनेंद्र कंगालजी । पुण्यकरो भंडार में सोधन देहु हाथसे डाल । पकड़ता कौन हाथ तिस काल जी ॥

दोहा ।

तीन लोक के नाथ की, करत प्रतिष्ठा हीन ॥
कौन ग्रंथ आधार से, हमें बतावो चीन ॥
सुनन को मोमन ललचाया । जिन्हें खल कुगुरुन विंहकायाजी॥५॥अभीतो बेचत माल फेरि बेचिहैं सिंहासनछत्र ॥ बुलाके बहु जैनी लिखि पत्रजी ॥ अभिमानी शठ धनी नाम को खरीदि करहैं तत्र । बहुत धन होवेगा एकत्रजी ॥

दोहा ।

बड़ा फलाहक सभा में, तिन्हें सुने हैं टेर । तब क्षण में बहु द्रव्य का, हो जावेगा ढेर । भला रुजिगार नज़र आया ॥
जिन्हें खल कुगुरुन विंहकायाजी ॥ ६ ॥
निर्लोभी क्षत्री कुल में भये तीर्थंकर अवतार ॥ तजा तिन सर्व परिग्रह भारजी । राज लक्ष्मी तृणसम तज ली वीतरागता धार । तजा सब संसारिक व्यवहारजी ॥

दोहा ।

सो अब लोभी बनिक के, घर आया जिन धर्म ॥
यासे धन तृष्णा बढ़ी, क्यों न करें लघु कर्म ॥
कुसंगति का यह फल पाया । जिन्हें खल कुगुरुन विहका याजी ॥ ७ ॥
हा कलिकाल कराल जिसमें नाना विधि की विपरीति ॥
करी रचना भेषिन तज नीतिजी । ता ही को बहुते पंडित शठ पुष्ट करें कर प्रीति । न देखें जिन शासन की रीतिजी॥

दोहा ।

जिन वच तिन वच की कुधी । करें नहीं पहिचान ॥
हठ ग्राही हो पक्ष को, तानत कर अभिमान ॥
न छोड़त कुल क्रम की माया । जिन्हें शठ कुगुरुनविंहका याजी ॥ ८ ॥ यह विचार कुछ नहीं हृदय में क्या जिनधर्म सरूप॥गिरत क्यों हठकरके भव कूपजी ॥ रची उपल की नाव कुगुरु ने डोवन को चिद्रूप । येही अवतार कलंकी भूपजी ॥

दोहा ।

वीतरागके धर्म की, मुख्य यही पहिचान ॥
लोभ असत वच अरु नहीं, जहां हृदय अभिमान ॥
ताहि ना लखें तिमर छाया । जिन्हें खल कुगुरुन विंहका-याजी ॥ ९ ॥ केवल ज्ञान छवी जिन की तिस पर पंचामृत धार॥देत कहें उत्सव जन्म अवारजी । नाम्बरी को जि

न गृह कर जिन प्रतिमा तहां विस्तारा धरें तहां क्षेत्रपा-
ल ला द्वार जी ॥

दोहा।

तेल सिंदूर चढ़ाय के, करें अंग सब लाल ॥
दरवाजे में घुसत ही, तिनको नावत भाल ॥
पीछे जिन दर्शन दर्शाया। जिन्हें खल कुगुरुन बिहकाया
जी ॥१०॥ रण शृंगार कथा सुन के अति अंग अंग हर्षायँ
तत्त्व कथनी सुन अति अलसायँ जी। कोई कलह बतावें
कोई सोवें झोके खायँ। कोई हो उदास घर उठ जायँजी ॥
दोहा—अन्य मती सदृश क्रिया, करते तहां अनेक ॥
तर्पणादि कहां तक कहूं, करते नाहिं विवेक ॥ पंथ
भेषिन का मन भाया। जिन्हें खल कुगुरुन बिहकाया
जी ॥ ११ ॥ धन बल कुल आरोग्य भोग। इनके मिलने
की आस ॥ तथा चाहें वैरी का नाशजी। इन फल माहिं
लुभाने अति ही ॥ नाहक सहते त्रास। करें बेला तेला
उपवास जी ॥

दोहा।

देव धर्म गुरु परखिये, नाथूराम जिन भक्त ॥
तजि विकल्प निजरूप में, हूजे अब आसक्त ॥
समय पंचम जगमें छाया। जिन्हें खल कुगुरुन बिहकायाजी

कुटिल ढोंगी श्रावककी लावनी ॥ २४ ॥

त्रेपन क्रिया सुयुक्त सरावग को तुमसागुण मूल ॥
जिन्होंके वचन वज्रके शूलजी ॥

(टेक)

क्षायक सम्यक भयो तुम्हारे उभय पक्ष क्षय कार॥
वंश भेदन कुठार वर धारजी। पर निंदा में करत न शंका
निःशांकित गुणधार। प्रशंसा करते निज हर वारजी॥
धन्य प्रशंसा योग्य सरावग वर्षंत मुखसे फूल।जिन्होंके॥१॥
सुकृत कांक्षा तजी सर्व एक वर्तंति पर अपकार॥
श्रेष्ठ यह निःकांछितगुणधारजी। निर्विचिकित्सागुणभारी
पर सुयश न सकत सहार। देखपरविभवहोतहियक्षारजी॥
पंडितोंमें सिरमौर कल्पतरु कलिकेश्रेष्ठ वंमूल॥जिन्होंके०२
परगुण ढकन लखन पर अवगुण यह गुण दृष्टि अमूढ़॥
कहत यही उपगूहण गुण गूढ़जी। ऐसीशिक्षा देतजायजी॥
भवसागरमें बूढ़। यही गुण थिती करण अति रूढ़जी॥
भ्रात पुत्रका चित फाड़त यह वात्सल्य गुणथूल।जिन्होंके०
आप अधिक आरंभ करत औरोंको शिक्षा देत।प्रभावनाअं
ग अधिक अब हेतजी। वर्णन कहांतक करों इसी विधि
सर्व गुणोंके खेत। कौतुकी पर दुःख देने प्रेतजी॥ देख सु
यशपर जलत सदा ज्यों भठियारेकी चूल॥ जिन्होंके०॥४॥
चिंटीकी करते दया ऊंटको साबित जात निगल॥
दयाके भवन ऐसे निश्चलजी। वनस्पतीकी रक्षाको बहु
त्यागे मूल रु फल। ठगें पंचेंद्रिनको कर छलजी॥
गल्लादिकमें हतें अनंते निशिदिन त्रस स्थूल॥ जिन्होंके०॥
मिथ्या यशके लोभी इससे निज करत प्रशंसा नित्त॥

चापलोसियोंसे राखत हित्तजी । सत्य कहेसो लगे ज़हरसा
जलै देखकर चित्त । बात सुन ताकी कोपे पित्तजी ॥
ऐसी प्रकृति सज्जन करनिंदित डालो इसपरधूल॥जिन्होंके०
एक विनय मैं करों आपसे आप विवेकी महा ॥
क्षमा कीजियो मैंने जो कहाजी । कविताईकी रीति झूठ दुर्व-
चन जाय नहीं सहा ॥ दिये बिन ज्वाब जाय ना रहाजी ॥
मत मनमें लज्जित होके अपघात कीजियो भूल॥ जिन्होंके
परनिंदा अरु आप बड़ाई करें सो हैं नर नीच ॥
बनें अति शुद्ध लगा मुख कीचजी । बेशर्मी से नहीं लजाते
चार जनों के बीच । पक्ष अपनी की करते खींचजी ॥
नाथूराम जिन भक्त करें बहु कहांतक वर्णन थूल॥जिन्होंके०

जिनेंद्र स्तुति लावनी ॥ २५ ॥

नदेखा प्रभु तुमसा सानीजी । वर निज गुण का दानी ॥
(टेक)
स्वार्थी देव नज़र आते । ना शिव मग बतलाते ॥
आप ही जो गोते खाते । तिन से को सुख पाते ॥
नहीं तुमसा केवल ज्ञानीजी । वर निज गुण का दानी ॥ १॥
निकट संसार मेरे आया । जो तुम दर्शन पाया ॥
लखत मुख उर आनंद छाया । सो जाय नहीं गाया ॥
दरश थारा शिव सुख खानी जी । वर निज गुणका दानी २
बहुत प्राणी तुमने तारे । जो थे दुःखिया भारे ॥
गहे मैं चरण कमल थारे । सब हरो दुःख म्हारे ॥

तुम सा को जां भव थिति हानी जी। वर निज गुण का दानी ३
सुयश इतना प्रभु जी लीजै। वसु कर्म रहित कीजै॥
नाथूराम को सुबोध दीजै। जासे भव थिति छीजै॥
जपें तुम नाम भव्य प्रानी जी। वर निज गुण के दानी॥४॥

तथा लावनी ॥ २६ ॥

प्रभूजी तुम त्रिभुवन त्राता जी। दीजै जन को साता॥

(टेक)

भ्रमों मैं भववनमें भारी। बहु भांति देह धारी॥
कभी नर कभी भया नारी। क्या कहूं विपति सारी॥
मिले अब तुम शिव सुख दाता जी। दीजै जन को साता१॥
सुयश तुम गणपति से गावें। शक्रादिक शिर नावें।
चरण आश्रय जो जन आवें। सो बेशक शिव पावें॥
तुम्हीं हो हितू पिता भ्राता जी। दीजै जन को साता॥ २॥
लखा मैं दर्शन सुखदाई। निधि आज अतुल पाई॥
खुशी जो मो चित पर छाई। सो जाय नहीं गाई॥
शीशतुम चरणों में नाता जी॥ दीजै जन को साता॥ ३॥
जपै जो नाम प्रभू थारा। पावे भवि सुख भारा॥
नशे दुःख जन्मादिक सारा। उतरे भव जल पारा॥
नाथूराम तुम पद को ध्याता जी। दीजै जनको साता॥४॥

भव्य स्तुति लावनी ॥ २७॥

सुगुरु शिक्षा जिन ने मानी जी। भये धन्य वे ही प्रानी॥

(टेक)

विषय विषवत जिन ने चीन्हे । तज काम भोग दीन्हे ॥
धर्म व्रत जप तप उरलीने । निज आतम रस भीने ॥
सुनी मन रुचि धर जिन वाणी जी ॥ भये धन्य वेही प्राणी१॥
मनुज भव लहि सुकृत कीना । विधि चार दान दीना ॥
कर्म वसुको तप कर क्षीना । शिव पुर वासा लीना ॥
वरी जिन जाय मुक्ति रानी जी । भये धन्य वे ही प्राणी॥२॥
मिटा अब त्रिजगतिका फेरा । तिष्ठे अविचल डेरा ।
हरा दुःख जन्म मरन केरा । तिनको प्रणाम मेरा ॥
अष्ट विधिकीजिनथिति भानीजी । भये धन्यवेही प्राणी॥३॥
कबे वह दिन ऐसा पाऊँ । वसु विधि तरुको ढाऊँ ॥
पास उस शिवत्रियके जाऊँ । ना फेर यहां आऊँ ॥
नाथूराम भक्ति हिये आनीजी । भये धन्य वेही प्राणी ॥ ४ ॥

दर्शनकी लावनी ॥ २८ ॥

आज प्रभुका दर्शन पायाजी । आनंद उरमें छाया ॥

(टेक)

मिटा मिथ्या मय अँधियारा । भ्रम नाश भया सारा ॥
हुआ उर सम्यक उजियारा । शिव मार्ग पदधारा ॥
काज सीझेगा मनभायाजी । आनंद उरमें छाया ॥ १ ॥
कल्पतरु मेरे गृह फूला । देखत सब दुःख भूला ॥
भया चिंतामणि अनुकूला । मोकों सब सुख मूला ॥
हर्ष कुछ जाय नहीं गायाजी । आनंद उरमें छाया ॥ २ ॥
स्वपर पहिचान भई सारी । पर परणति वमिडारी ॥

सुगुरु वच श्रद्धा उर धारी। दुःख नाशक हितकारी॥
लखत मुख मस्तक पद नायाजी। आनंद उरमें छाया३॥
दया अब दया नाथ कीजे। निज चरण शरण दीजे॥
दुःख मेरा जिसमें छीजे। सो करो सुयश लीजे॥
नाथूराम निश्चय उर लायाजी। आनंद उरमें छाया॥ ४॥

श्रीहर्दाके जिन मंदिरके अतिशयकी लावनी॥ २९॥

श्रीश्यामवर्ण महाराज, गरीब निवाज, रखो मम लाज, मैं आया शरण॥ तुम हो त्रिभुवनके नाथ जोड़ मैं हाथ न वाऊं माथ तुम्हारे चरण॥

(टेक)

तुम हो देवनके देव, देव करें सेव, सदा स्वयमेव तुम्हारी नाथ। सौ इंद्र नवामें भाल, दीनदयाल, तुमको त्रैकाल॥ मैं नाऊं माथ। छवि तुम्हरी दर्शन योग्य, बहुत मनोज्ञ तजे भव भोग, तुमने एक साथ। श्रीवीतराग निर्दोष, गुणोंके कोष, हरो मम दोष, मैं जोड़ों हाथ॥

छड़।

सुन भाई, श्रीवीतरागकी मूर्ति पूजो सदा॥
सुन भाई, ईति भीति भय विघ्न होय ना कदा॥

सर्पट।

करें देव अतिशय नाना विधि हर्ष धार तनमें।
तिन्हें देख आश्चर्यवान होते प्राणी मनमें॥

झेला।

ऐसी अतिशय अधिकारी। होवें जिन ग्रेह मझारी।
तिनको देखें नर नारी। उर हर्ष होय अतिभारी॥
अब तिनका कुछ विस्तारं, सुनो नर नार, हर्ष उर धार
जो चाहो तरण। तुमहो त्रिभुवनके नाथ॥ १॥

श्री हर्दाका जिन धाम, पवित्र जो ठाम, तहां किसी भामने॥ अविनय करी, दर्शनको आई अपवित्र, देख चरित्र, सुरों विचित्र, विक्रिया धरी। श्री शांति मूर्ति जिन देव, तिससे स्वयमेव, कढ़ापसेव, विसीहीवरी। श्री जिनप्रतिमासेमहा भूमि जल बहा, जाय ना कहा. लगी ज्यों झरी॥

छड़।

सुन भाई, यह देख असंभव आतिशय सब थर हरे॥
सुन भाई, नर नारी सब आश्चर्यवान हुए खरे॥

सर्पट।

अन्य मती भी यह चरित्र सुन दर्शन को आये।
धन्य २ मुख से कहि नर त्रिय जिनवर गुण गाये॥

झेला।

बहु विधि स्तुति नर नारी। कीनी जिन ग्रेह मझारी॥
तब देव विक्रिया सारी। होगथी क्षमा तिही बारी॥
यह देख अशुभ विक्रिया, सर्व नरत्रिया, त्याग बदक्रिया,
लगे अवहरण। तुमहो त्रिभुवन के नाथ॥ २॥
अब कहूं दूसरी बार की, अतिशय सार, सुनो नर नार,

धार त्रय योग। बनता था श्रीजिनधाम, लगा थां काम, तहां तमाम, जुड़े थे लोग। तिन यह मन्सुबाठान, कि श्रीभगवान को छत पर आन, करो उद्योग। यहां पूजनकी विधि नहीं, बनेगी सही, सचन यह कही, समझ मनोग॥

छड़।

सुन भाई, जिन प्रतिमाको दो जने उठाने गये॥
सुन भाई, तिन से जिनवर किंचित ना चिगते भये॥

सर्पट।

लगे उठाने लोग बहुत तब कर २ के अति शोर॥
हुआ प्रभू का आसन निश्चल चला न किंचित् जोर॥

झेला॥

तब स्वप्न सुरों ने दीना। तुम हुए सकल मतिहीना॥
यह कम चौड़ा है जीना। कैसे ले चढ़हो दीना।
इससे यहीं पूजन सार, करो नर नार, हर्ष उर धार॥
जो चाहो तरण। तुमहो त्रिभुवन के नाथ॥ ३॥
ऐसे अतिशय बहु भांति, जहां गुण पांति, करे सुर शांति चित्त अति धरें। जहां श्रावक नर त्रिय आय, द्रव्य वसु ल्याय, वचन मन कायसे, पूजें खरें। जब आवे भादों मास, होंय अघ नाश सर्व उपवास पुरुष त्रियकरें। नाना विधि मंगल गाय, तूर बजाय, वचन मन काय से पूजें खरें॥

छड़।

सुन भाई, कार्तिक फाल्गुण आपाढ़ अंत दिन आठ।

सुन भाई, व्रत नंदीश्वर का रहे जहां शुभ ठाठ ॥

सर्पट ।

दिन प्रति पूजा शास्त्र कथादिक होवें अधिकाई ॥
कटें पूर्व कृत पाप दृष्टि जब आते जिनराई ॥

झेला ।

धन्य जन्म उन्हींका सारा । देखें दर्शन प्रभु थारा ।
है यही मनोरथ म्हारा । नित दर्शन दो त्रय वारा ॥
यों विनती नाथूराम, करें वसुजाम, रखो निज धाम ।
मिटे भय मरण ॥ तुम हो त्रिभुवनके नाथ ॥ ४ ॥

शारी ।

चिंतवत जिन नाम फल उपवास होत हजार जी ।
फल गमन करते दर्श को हों लाख प्रोषध सारजी ॥
हों क्रोड़ा कोड़ अनंत फल प्रोषध दरशते वारजी ॥
कर दरश नाथूराम ऐसे नाथका हर वारजी ॥

दौड़ ।

करो दर्शन जैनी निशि दिन । अहो मत भोजन दर्शनबिन।
सार दर्शन बतलाया जिन । खबर इसकी मत भूलोछिन ॥
समझ मन जो शिव की इच्छा।नाथूराम मनधर यह शिक्षा॥

जिन दर्शनकी लावनी ॥ ३० ॥

महाराज लाज रखो जनकी । जन चरण शरण आया ।
धन्य दिन तुम दर्शन पाया । लाज रखो जनकी ।

(टेक)

जिनराज नाथ त्रिभुवन के । त्रिभुवनके दुःख हर्त्ता । मुक्ति मगके प्रकाश कर्त्ता । चरणयुग थारे जो निज हिरदे धर्त्ता । कर्म हनि मुक्ति वधू वर्त्ता ॥ जैन ग्रंथों में ऐसा वर्णन गाया । धन्य दिन तुम दर्शन पाया ॥ १ ॥
भये आज सफल पद मेरे । जो तुम तक चल आये । धन्य दृग तुम दर्शन पाये । सफल कर मेरे जो पूजन फल लाये । धन्य रसना जिन गुण गाये । सफल ममस्तक तुम चरन तल नाया । धन्य दिन तुम दर्शन पाया ॥ २ ॥
महराज इंद्र शत थारी करते वसु विधि पूजा । अन्य तुम सम न देव दूजा । वचन मृदु थारे शशि मिश्रीके खूजा । धरत हिरदे शिव मग सूजा । विरद यह थारा प्रभु त्रिभुवन में छाया । धन्य दिन तुम दर्शन पाया ॥ ३ ॥
जिन राज दासकी विनती यह विनती सुन लीजे । नाश वसु विधि अरिका कीजे । वास शिव थल का निज सेवक को दीजे । कार्य तुम से मेरा सीजे । नाथूराम थारे दर्शन को ललचाया । धन्य दिन तुम दर्शन पाया ॥ ४ ॥

जिनभजनका उपदेश लावनी ॥ ३१ ॥

भजन जिनवर का कर त्रिविधि प्रकार । करें भवोदधिपार॥

(टेक)

अन्य देव सब रागी द्वेषी काम क्रोधकी खान ।
वीतराग सर्वोत्कृष्ट एक दाता पद निर्वाण ॥

धर्म नौका में भवि जनको धार । करें भवोदधि पार ॥१॥
जिन सम देव अन्यको जगमें करे कर्मरिपुनाश ।
भ्रम तम हरन भानु जिनवानी तासम वचन प्रकाश ॥
ऐसे तो केवल जिनवर ही सार । करें भवोदधि पार ॥ २ ॥
सेवत शत सुर राय हर्ष धर चरण कमल जिनराय ।
पूजत भविजन आय जिनालय वसुविधि द्रव्य चढ़ाय ॥
पूर्व पापों का करते संहार । करें भवोदधिपार ॥ ३ ॥
नाथूराम जिन भक्त ऐसे जिनवर को बारंबार ।
मस्तक नाय प्रणाम करें करनेको कर्म अघ क्षार ॥
भक्ति जिनवर की सुर शिव दातार । करें भवोदधिपार ॥ ४ ॥

तथा ॥ ३२ ॥

जपो जिन राज नाम सच्चा । अन्य देव सब रागी द्वेषी मिथ्या मत रच्चा ॥

(टेक)

कहत सब दया धर्मकी मूल । फिर हिंसा यज्ञादि में करते यह मूर्खोंकी भूल ॥ पड़ो उन वेद शास्त्रों पर धूल । जिनमें हिंसा धर्म प्ररूप्या शास्त्र नहीं वे शूल ॥

दोहा ।

जो दुष्टों करकेरचे, काम क्रोध की खान ।
शास्त्र नहीं वे शस्त्र हैं, घातक निज गुण ज्ञान ॥
जैन बिन अन्य वचन कच्चा । अन्य देव सब रागी ॥ १ ॥
शस्त्र धारें क्रोधी कामी । या सेवक निर्बल शंकायुत सो

अपूज्य नामी। दयायुत जो अंतर्यामी। सो क्यों हते शस्त्र गहि पर जीहो त्रिभुवन स्वामी।

दोहा।

नाश करे पर प्राण का, सो क्यों रहा दयाल।
जैसे मेरी मात अरु, बांझ कहे यों बाल॥
बांझ क्यों रही जना बच्चा। अन्य देव सब रागी॥ २॥
रमे ईश्वर निज पर नारी। तो कुशील का त्याग कहा क्यों यह अचरज भारी। गई मति मूर्खों की मारी। राग द्वेषकी खान तिन्हें कहें ईश्वर अवतारी॥

दोहा।

काम क्रोध वश जो मरें, सहें नरक दुःख आपैं।
तिनको शठ ईश्वर कहें, सो कैसे हरें पाप।
पड़े जो आप नरक खच्चा, अन्य देव सब रागी॥ ३॥
सार एक वीतराग वाणी। जो सर्वज्ञ देव निज भाषी॥
त्रिभुवन पति ज्ञानी। जिसे हरि हल चक्री मानी॥
सेवत शत सुर राय हर्ष धर सत गुरु वक्खानी॥

दोहा।

जा वाणी के सुनत ही, होंयजीव सुज्ञान।
नाथूराम भव तजि लहें, निश्चय पद निर्वाण॥
फेर ना जने ताहि जच्चा। अन्य देव सब रागी॥ ४॥

चौवीसों तीर्थंकरकी लावनी ॥ ३३ ॥

दास कृत विनती चित धारो । आपतरे संसारोदधिसे
अब मोहू तारो ॥

(टेक)

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति २ दीजे ॥
पद्मप्रभु सुपार्श्व चंद्रप्रभु तिमर नाश कीजे ॥दासकृत०॥१॥
पुष्प दंत शीतल श्रेयान्स वास पूज्य स्वामी ।
विमल अनंत धर्म श्रीशांति शांति करन नामी॥दास०।२।
कुंथु अरह मल्लिनाथ प्रभू मुनि सुव्रत गुण गाऊं ॥
निमि नेमीश्वर पार्श्व नाथ सन्मति को शिरनाऊं॥दास०॥३॥
ऐसे जिन चौवीस जगत्रय ईश भजो वसु जाम ॥
नाथूराम भक्ति जिन की से पावों अविचल ठाम॥दास०॥४॥

देव धर्म गुरु परीक्षा की लावनी ३४ ।

करो देव गुरु धर्म परीक्षा शिक्षा हितकारी ॥
गुरु बार २ समझावें सब चेतो नर नारी ॥

(टेक)

राग द्वेष मद मोह आदि जिनके वर्तें स्वयमेव ।
कामी क्रोधी छल धारी सो जानो सर्व कुदेव ॥
वीतराग सर्वज्ञ हितेच्छुक दे शिक्षा बहु भेव ॥
संसार भ्रमण नाशाके सो जानो सर्व सुदेव ॥
ऐसे लक्षण शुभ अशुभ देख पहिचान करो सारी ॥
गुरु बार २ समझावें सब चेतो नर नारी ॥ १ ॥

शठ सग्रंथ जो तपकरें धरें बहु आडम्बर मानी ॥
ऋषि यती बनें वैरागी निज मुख से अज्ञानी ॥
धन लें तीर्थ के नाम बनें या परधन लेदानी ॥
ये चिह्न कुगुरु के जानो जो भाषे जिनवानी ॥
नित पोषें शिथिलाचार रहें रत काया से भारी ॥
गुरु बार २ समझावैं सब चेतो नर नारी ॥ २ ॥
नित पोषें विषय कषाय और आहार सदोष करें ॥
हिंसा मय धर्म बतावें सो जानो कुगुरु खरें ॥
जो निर्वांछक तप तपें दिगम्बर शांतिस्वरूपधरें ॥
सो सुगुरु तिन्हें नित सेवो पर तारें आप तरें ॥
अब सुनो कुधर्म सुधर्म रूप लखि पूजो धीधारी ।
गुरु बार २ समझावें सब चेतो नर नारी ॥ ३ ॥
पक्षपात युत राग द्वेष पोषक जामें उपदेश ॥
शृंगार युद्ध क्रीड़ादि इनका स्वतन्त्र आदेश ॥
ऐसा कुधर्म पहिचान तजो अवखान सजो मतलेश ॥
शुभ धर्म दयायुत पालो जो भाषा आप्त जिनेश ॥
सम्यक रत्नत्रय रूप भूप त्रिभुवन पति हितकारी ॥
गुरु बार २ समझावें सब चेतो नर नारी ॥ ४ ॥
यों परख सुदेव सुगुरु सुधर्म पीछे कीजै श्रद्धान ॥
बिन किये परीक्षा पूजें सो पीटें लीक अजान ॥
दमड़ी का बर्तन लेंय उसे ठोकें फिर २ दे कान ॥
देवादि परखनापूजें जो जगमें रत्न महान ॥

कहैं नाथूराम जिन भक्त समझ क्यों बनते अविचारी ॥
गुरु बार २ समझावें सब चेतो नर नारी॥ ८ ॥

जिनेन्द्र स्तुति लावनी ॥ ३६ ॥

शरण सुखदाईजी महाराज।धन्य प्रभुताई तुम्हारीजिनदेवा॥
तुम्हारी जिन देवाहो।तुम्हारी जिन देवा करें।सुर नर सेवा॥

(टेक)

अधम उद्धारक जी महाराज । भवोदधि तारक प्रभु त्रिभुवन त्राता । प्रभु त्रिभुवन त्राता हो, प्रभुत्रिभुवन त्राता । नमो शिव सुखदाता॥बहुत भव भटकाजी महाराज अधोमुख लटका कर्म वश उर माता । कर्मवश उर माताहो कर्म वश उर माता । नहीं पाई साता ॥

दोहा ।

तीनों पन दुःख में गये, सुख ना लयो लगार ।
अब कुछ पुण्य उदय भयो । पाये त्रिभुवन तार ॥

गया दुःख साराजी महाराज । लया सुख भारा । लखे भवोदधि खेवा । लखे भवोदधि खेवा हो । लखे भवोदधि खेवा । करें सुर नर सेवा ॥ १ ॥

नरक दुःख पाया जी महाराज। जाय नहीं गाया तुम्हीं जानत ज्ञानी।तुम्ही जानत ज्ञानी हो । तुम्ही जानत ज्ञानी । नहीं तुमसे छानी ॥ नारकी मारें जी महाराज । क्रोध अति धारें । डाल पेलेंघानी ॥ डाल पेलें घानी हो । डाल पेलें घानी । सहैं अतिदुःख प्राणी ॥

दोहा।

सहे सागरों दुःख घने, धर धर जन्म अनेक॥
तहां कोई रक्षक नहीं, भुगते आतम एक॥

शरण अब आया जी महाराज। चरण शिरनाया। तुम्हींहो सुधिलेवा॥ तुम्हीं हो सुधिलेवा हो। तुह्मीहो सुधिलेवा। करें सुर नर सेवा॥ २॥ पशुदुःखसाराजी महाराज। सहा अति भारा। कौन मुख से गावे॥ कौन मुख से गावे हो। कौन मुख से गावे। पराश्रय जो पावे॥ जोतें अरु लादें जी महाराज। मारें अरु बांधे मांस तक कट जावे मांसतक कटजावे हो। मांस तक कट जावे। तहांको बचावे॥

दोहा।

तृण पानीभी पेट भर, मिलत समय पर नाहिं॥
वहत भार अति धूप में, मिलै न पल भर छाहिं॥

सुना यश भारी जी महाराज। जगतहितकारी। दीजे शिव सुख मेवा। दीजे शिव सुख मेवाहो। दीजै शिव सुख मेवा करें सुर नर सेवा॥ ३॥ देव पद पाने जी महाराज। वृथा सुख माने। नहीं तहां सुख होता। नहीं तहां सुख होताहो नहीं तहां सुख होता॥ विषय वश दिन खोता। मरण थिति आवेजी महाराज। महा बिललावे। अधिक दुःखकररोता। अधिक दुःखकर रोताहो। अधिक दुःखकररोता। खाय विधि वश गोता।

दोहा ।

रंचन सुख संसार में, देखा चहुँ गति टोहि ।
यासे भव दुःख हरनको, भक्ति देहु निज मोहि ॥
नाथूराम जांचाजी महाराज । देहु सुख सांचा । भक्त लखि स्वयमेवा । भक्तलखि स्वयमेवाहो । भक्त लखि स्वयमेवा ॥ करें सुर नर सेवा ॥ ४ ॥

ऋषभ देव स्तुति लुप्त वर्णमाला में लावनी ॥ ३६ ॥

अजर अमरअव्ययपद दाता।आदीश्वर प्रभु जगतविख्याता। इस पर भव सुखदाई। ईश्वर त्रिजगतिके पारकरो जिनराई।

(टेक)

उत्पति मरण जरा गद नाशो।ऊर्ध्वलोक शिखर दो वासो॥ ऋषभ ऋषी पद दाता।ऋआदिक देवीं सेवकरें तुममाता॥ एक चित्त जो तुम को ध्यावे । ऐश्वर्यित हो शिवपद पावे। ओर नजगके आता । औरों को जगसे तारे अहो जगत्राता। अंग अंग मेरे हर्षाये । अः ह नाथ तुम दर्शन पाये। कर्मझड़े अधिकाई। ईश्वर त्रिजगतिके पारकरोजिनराई१॥ खल कर्मों मोहि बहुत भ्रमाया । गमन करत भव अंत न आया।घटी न भव थिति स्वामी । चरणाम्बुज थारे यासेगहे युग नामी । छत्र तीन थारे शिर सोहें । जगितजीव देखत मन मोहें॥ झलझलाट द्युति चामी । टूटें भवबेड़ी होवे मुकति आगामी॥ठहरे काल अनंततहांही।डोले ना इस जगकेमाहीं ॥ ढांढ़स युत हर्षाई । ईश्वर त्रिजगति के पार करो जिन

राई ॥ २ ॥ णमों युग्म पद पद्म तुम्हारे। तीन भवन भवि तारण हारे ॥ थकित अमर नर नारी। दर्शन दृग देखें नाशति विपदा सारी ॥ धन्य २ सुर नर उच्चारें। नवत चरण सब पाप निवारें ॥ पावें परम सुख भारी। फलदायक जग में तुम दर्शन सुखकारी ॥ वासव गण धरादि गुण गावें। भली भांति गुण पार न पावें ॥ महिमा तिहूं जग छाई। ईश्वर त्रिजगति के पार करो जिनराई ॥ ३ ॥ युग चरणाम्बुज भृंग करीजे। रक्षा कर निज सेवा दीजे ॥ लीजे खबर जनकेरी। वर भक्ति तुम्हारी नाशकहै भव फेरी ॥ शोभित तीन जगति के नायक। पट कायक जीवन सुखदायक ॥ सुधिलीजे प्रभु मेरी। हनियेविधि आठों कीजे नहीं अब देरी ॥ क्षण क्षण नाथूराम शिरनावें। त्रिभुवन पति थारे गुण गावें ॥ ज्ञान कला शुभ पाई। ईश्वरत्रिजगति के पारकरो जिनराई ॥ ४ ॥

श्री नेमीश्वरकी लावनी ॥ ३७ ॥

यदुपती सती शुभ राजमती त्रिय त्यागी। महाराज जाय तप गिरिपर धाराजी। गहि ज्ञान चक्र कर वक्र मोह भटक्षणमें माराजी ॥

(टेक)

बल अतुल देख जिनवर का कृष्ण शकाने। महाराज राजका लालच भारीजी। ताके वशहोके कृष्ण कुटिलताम नमें धारीजी ॥ करो नेमीश्वर का व्याह कही हरि स्याने।

महाराज उग्रसेनकी दुलारी जी । जांची नेमीश्वर काज सुशीला रजमति प्यारी जी ॥ सज के बरात जूनागढ़को हरि आये ।मार्ग में हरिने बन पशु बहुत घिराये । महाराज लखे द्दग नेमि कुमाराजी ॥ गहि ज्ञान चक्र कर वक्र मोह भट क्षणमें माराजी ॥१॥ घेरा में पशु अति आरति युत बिलखावें । महाराज अधिक दीनता दिखावें जी । लखिकै दयालु नेमीश्वर को द्दग नीर बहावेंजी । प्रभु कही रक्षकोंसे क्यों पशु घिरवाये । महाराज कही उन यदुपति आवेंजी । व्याहनको तिन संग नीच नृपति सो इनको खावें जी ॥ सुन श्रवण नेमि प्रभु धृग २ वचन उचारे । सब विषयभोग विषमिश्रित अशन विचारे महाराज मुकुट अचला पर डाराजी । गहि ज्ञानचक्र कर वक्र मोह भट क्षण में माराजी ॥ २ ॥ क्रम से बारह भावना प्रभू ने भाई । महाराज तुरत लौकांतिक आये जी । नति कर नियोग निज साधि फेर निज पुरको धाये जी ॥ तब सुर पति सुरयुत आय महोत्सव कीना । महाराज प्रभू शिवका बैठायेजी । फिर सहस्राम्र बन माहिं प्रभूको सुरपति लायेजी ॥ तहां भूषण बसन उतार लुंच कच कीने । सिद्धन को नवि प्रभु पंच महाव्रत लीने ।महाराज परिग्रह द्विविधि निवारा जी ॥ गहि ज्ञान चक्र कर वक्र मोह भट क्षण में मारा जी ॥ ३ ॥जब राज मतीने सुनी लई प्रभु दिक्षा । महाराज उदासी मनपर छाईजी । धृग जान त्रिया

पर्याय लेन व्रत गिरि को धाईजी ॥ जब मात पिताने सुनी अधिक दुःख पाया । महाराज बहुत राजु समझाई जी ॥ जब देखीपरमउदास उदासी सब को आईजी ॥ राजुलने दिक्षा लई जाय जिनवर पर ॥ मृदु केश उपाड़े नारि आप कोमल कर । महाराज किया दुद्धर तप भाराजी । गहिज्ञा न०॥४॥ कृश करके काय कषाय अमरपद पाया । महाराज वरेगी अब शिवरानी जी । श्रीनेमि घातिया घाति भये प्रभु केवल ज्ञानी जी ॥ बहु भव्यन को संबोधि अघाती घाते । महाराज सर्व भवकी थिति हानीजी । वर अविनाशी पद पाय दिया जगको कर पानीजी ॥ कहें नाथूराम जिन भक्त सुनो जग त्राता निज भक्ति देहु अरुमेंटो सर्व असाता । महाराज लिया पद पद्म सहाराजी ॥गहि ज्ञान चक्र० ॥५॥

अथ दर्शनाष्टक (दोहा)

श्री जिनवरं करुणायतन, तुम सम और नदेव ॥
भव समुद्र तारण तरण, धन्य तुम्हारी टेव ॥ १ ॥
इंद्रादिक सुर असुर सब, तुम सेवक जिनराज ।
तुम प्रसाद सब सफल हों, मन वांछित मम काज ॥ २ ॥
भ्रमण करत संसार में, भयो मुझे चिरकाल ॥
करगहि अब भवसिंधुसे, काढ़ो दीनदयाल ॥ ३ ॥
एक ग्राम पति दुख हरे, तुम त्रिभुवन पति ईश ।
यासे मम रक्षा करो, शरण लिया जगदीश ॥ ४ ॥
वीतराग छवि परम तुम, धारी नाशा दृष्टि ।

देखत दृग आनंद हो, दृढ़ आसन उत्कृष्ट ॥ ५ ॥
ज्ञाता दृष्टा जगति के, जानत मम दुख आप।
यासे क्या वर्णन करों, नाश करो भव ताप ॥ ६ ॥
विविध भाँति विनती करों, धरों चरण तल माथ।
दुःख जलनिधि से काढ़िये, कर गहि करुणानाथ ॥ ७॥
तुम चरणाम्बुज मम हृदय, वास करों वसु य़ाम।
जब तक जग वासी रहों, माँगें नाथूराम ॥ ८ ॥

हजूरी (छप्पय)

देखे श्रीजिनराज आज विपदा सब भागी।देखे श्री जिनराज आज आतम रुचिजागी। देखे श्री जिनराज कार्य सीजे मन भाये। देखे श्री जिनराज आज सब पाप विलाये। दर्शत र-वि सुख भ्रम नशो नेत्र कमल विगशित भये। धन्य आज दिवस मद अष्ट हरि अष्ट अंग तुमको नये ॥ १ ॥ देखे श्री जिनदेव सेव जिन करत सुरासुर। देखे श्री जिनदेव धर्म र-थ वहन परम धुर।देखे श्री जिन देव पाप अताप विनाशक देखे श्री जिनदेव स्वपर तत्त्व के प्रकाशक।आनंदकंद जिन चंद्र प्रभु दर्शत दृग हर्षत अमित। जन नाथूराम वंदतच रण परम सरम दातार नित ॥ २ ॥

श्री जिन दर्शन (दोहा)

दर्शन श्री जिनदेव का, नाशक है सब पाप ॥
दर्शन सुर गति दाय है, साधन शिव सुख आप ॥ १ ॥
जिन दर्शन गुरुवंदना, इन से अघ क्षय होय ॥

यथा छिद्रयुत कर विषे, चिर तिष्टे ना सोय ॥ २ ॥
वीतराग मुख दर्शियो, पद्म प्रभा सम लाल ॥
नेक जन्म कृत पापसो, दर्शत नाशें हाल ॥ ३ ॥
जिन दर्शन रवि सारिखा, होय जगत तम नाश ॥
विगशित चित्त सरोज लखि, कर्त्ता अर्थ प्रकाश ॥ ४ ॥
धर्मामृत की वृष्टिको, इन्दु दरश जिनराय ॥
जन्म ज्वलन नाशे बढ़े, सुखसागर अधिकाय ॥ ५ ॥
सप्त तत्त्व दरशें अहै, वसुगुण सम्यकसार ॥
शांति दिगम्बर मूर्तिजिन, दर्शि नमों बहु बार ॥ ६ ॥
चेतन रूप जिनेश गुण, आतम तत्त्व प्रकाश ॥
ऐसे श्री सिद्धान्तको, नित्य नमों सुख आस ॥ ७ ॥
अन्य शरण वांछों नहीं, तुम्हीं शरण स्वयमेव ॥
यासे करुणा भाव धर, रखो शरण जिन देव ॥ ८ ॥
त्रिजगति में इस जीवको, तारण हारा कोय ।
वीतराग वर देव विन, भया न आगे होय॥ ९ ॥
श्री जिन भक्ति सदा मिलो, प्रति दिन भव २ माहिं ॥
जब तक जग वासी रहों, अंतर वांछों नाहिं ॥ १० ॥
विन जिन वृष शिव हो नहीं, चाहो हो चक्रीश ॥
धनी दरिद्री होत सब, जिन वृष से शिव ईश ॥ ११ ॥
जन्म जन्म कृत पाप अब, कोटि उपार्यजोय ॥
जन्म जरादिक मूल से, जिन वंदत क्षय होय ॥ १२ ॥
यह अनूप महिमा लखी, जिन दर्शन की व्यक्त ॥

यासे पद शरणा लिया, नाथूराम जिन भक्त ॥ १३ ॥
जिन दर्शन लखि संस्कृत, भाषा किया बनाय ॥
भव्य जीव नित उर धरो, यह भव भव सुखदाय ॥ १४ ॥

२४ चौबीस जिनेंद्रकी स्तुति गौरीमें ॥ १ ॥

शरण निज राखो नाभिके नन्द ॥

(टेक)

सुर तरु क्षीण भये लखि पुरजन दुःखी भये मतिमंद ॥
नाभि नृपति युत तुम तट आये दर्शत पायानन्द ॥ १ ॥
ग्राम धाम रचना हरि कीनी। सुनि आदेश सुछंद ॥
निज सुख प्रभु षट कर्मबताये। उदर भरनको धंद ॥ २ ॥
आदि तीर्थ वर्तावन हारे। प्रगटे आदि जिनेंद्र ॥
गरण धरादि कर पूजनीक प्रभु नवत चरण शतइंद्र ॥ ३ ॥
उपादेय पद पद्म तुम्हारे। त्रिजगति को सुख कंद ॥
नाथूराम जिन भक्त जगतका, चाहत भ्रमना वंद ॥ ४ ॥

अजित नाथ स्तुति ॥ २ ॥

अजित मोहिं अजित अजित करो नाथ। ॥

(टेक)

वसु अजीत जीते विधि तुमने। ज्ञान चक्र गहि हाथ ॥
ध्यान कृपान पानगहि क्षणमें। मोह किया निरमाथ ॥ १ ॥
अर्द्ध चतुर्थ काल गत प्रगटे। धर्म तीर्थ के नाथ ॥
धर्म पोत धरि बहु भवितारे। पहुँचे शिव ले साथ ॥ २ ॥
गज लक्षण लखि उभय चरण को। नमों भाल धर हाथ ॥
उरगण पति सुतहीन दासपर। कृपा करो गुण गाथ ॥ ३ ॥

है तुम विरद प्रगट त्रिभुवनमें । तारे बहुत अनाथ ॥
नाथूराम जिनभक्तदास को । कीजे आज सनाथ ॥ ४ ॥

श्रीसंभवनाथ स्तुति ॥ ३ ॥

करो मो संभव भव दुःखदूर (टेक)
इन कर्मों मोहि बहुत फिरायो । दुखी भयो भरपूर ॥
लख चौरासी योनि चतुर गति छानी फिरं २ धूर ॥ १ ॥
त्रिभुवनमें कोई रक्षक नाहीं । काल बलीसे शूर ॥
यासे शरण लिया प्रभु थारा । राखो आप हजूर ॥ २ ॥
इसका निग्रह तुमही कीना । ज्ञान गदा से चूर ॥
अब मेरे वसु विधि अरि नाशो । नित्य सताते क्रूर ॥ ३ ॥
भव गद नाशनको प्रभु तुमही । सार सजीवन मूर ॥
नाथूराम-जिनभक्त तुम्हारे । नित २ बाजो तूर ॥.

श्रीअभिनंदननाथ स्तुति ॥ ४ ॥

हमारे श्री अभिनन्दन ईश (टेक)
अभिरुचि हमरी निज स्वभावमें । होय करो मुक्तीश ।
विषय भोगकी मिटे वासना । पाऊं शिव जगदीश ॥ १॥
राग द्वेष संशय विमोह विभ्रम । तुमडारे पीस ॥
अब प्रभुजी मेरा रिपुनाशो । दारुण मोह खवीश ॥ २ ॥
वसु विधि मूलरु शाखा तिनकी । शत अरु वसु चालीस॥
ध्यान धनंजयसे सब जाती । कंटक यथा कृपीश ॥ ३ ॥
अजर अमर अव्ययपद जनको । दान करो विश्वीश ॥
नाथूराम जिन भक्त नवावत । तुम पदपंकजशीश ॥ ४॥

श्रीसुमति नाथ स्तुति ॥ ५ ॥

सुमति प्रभु सुमति सुमति करो मेरी ॥ (टेक)
कुमति सहित चिरकाल व्यतीतो। करत २ भव फेरी ॥
भव वन सघन विषे अति भटको। निज पुर बाट न हेरी॥
इंद्रिय विषयनमें रुचिठानी। दिन २ अधिक घनेरी ॥
सुमति सुनारि दृष्टि नहीं आनी। रमी कुमति नित चेरी२॥
कुमति कुमारग भटकाने को। मावस रैनि अँधेरी ॥
तुम मुख चंद्र लखत इम भागी। ज्यों मृगपति लखि छेरी॥
अब सुमतीश ईश तुम महिमा। दिन दिन जग प्रगटेरी॥
नाथूराम जिन भक्त तुम्हारे। नित्यबजो जय भेरी ॥ ४ ॥

श्रीपद्मप्रभु स्तुति ॥ ६ ॥

जगति पति शोभित त्रिजगति भाल ॥ (टेक)
पद्म प्रभुपद पद्म प्रभालखि। पद्म प्रभा पामाल ॥
क्षीण कला शशिं ज्यों रवि आगे। भासत तज रँगलाल १॥
पद्म प्रभा तजि तुम पद पंकज। सेवत भवि अलि माल॥
पंकज प्राण हरे अलिके तुम। पद भवि अलि रक्षपाल २॥
ऐसे तुम पद पद्म प्रभा युत। लखि मन होत खुशाल ॥
ज्यों निर्धन पाये चिंतामणि। मानत हर्ष विशाल ॥ ३ ॥
कामधेनु सुरतरु चिंतामणि। तुम आगे क्या माल ॥
नाथूराम जिन भक्त व्यक्त तुम। त्रिभुवनके रखवाल ॥४॥

श्रीसुपारसनाथ स्तुति ॥ ७ ॥

तुम्हारे चरण कमलका दास ॥ (टेक)
सत्य सुपारस तुम ही जगमें। पूरत जनकी आस ॥
सुवर्ण रूप होतसो क्षणमें। जो आवत तुम पास ॥ १ ॥
कर्म कुधातु पनो पद परसे। होत क्षणकमें नाश ॥
स्ववरण शुद्ध चिदातम अपना। करता रूप प्रकाश ॥२॥
पारस कृत सुवरणको हरके। चोरादिक दें त्रास ॥
तुम पद परशे स्ववर्ण प्रगटे। हर्त्ता कोई न तास ॥ ३ ॥
शुद्ध सुपारस नाम तुम्हारा। सुनते होय हुलास ॥
नाथूराम जिन भक्त जगततजि। चाहत तुम तट वास ४ ॥

श्रीचंद्रप्रभुनाथ स्तुति ॥ ८ ॥

चंद्र प्रभु राजत त्रिभुवन चंद्र ॥ (टेक)
चंद्र कलंकी तुम निकलंकी। दाता जगदानंद ॥
योति रहित शशि होत दिवसमें। तुम द्युति सदाअमंद १॥
मेघ पटल ग्रह राहु आदिसे। चंद्रकला हो वंद ॥
तुम मुखचंद्र प्रकाशित अहो निशि। त्रिभुवनको सुखकंद
होत उद्योत चंद्र जब निशिमें। मुद्रित हो अरविंद ॥
तुम मुख चंद्र देख भवि पंकज। विगशित लहि आनंद ३॥
चतुरनकाय देवनर खगपति। पूजत चरण शतेंद्र ॥
नाथूराम जिन भक्त तुम्हारी। चाहत सेव जिनेंद्र ॥ ४ ॥

श्रीपुष्पदंत स्तुति ॥ ९ ॥

तुम्हारा ध्यान धरत नित संत ॥ (टेक)

मदन सदन तज जाय बसा वन। पुष्पनिमें भयवंत ॥
तुम पद आगे पुष्प चढ़त तव। या मिसि सेव करंत ॥१॥
कुंद पुष्पसे धवल प्रकाशित। अधिक तुम्हारे दंत ॥
पुष्प-धूप हिमसे कुम्हिलाते। तुम रद सदा दिपंत ॥ २ ॥
उज्ज्वल कीर्ति प्रकाशत थारी। श्वेत दशन भगवंत ॥
पुष्पदंत यह नाम तुम्हारा। सार्थक त्रिभुवन कंत ॥ ३ ॥
अस्थि रदनयह महिमा पाई। तुम आनन निवसंत ॥
नाथूराम जिन जो तुम सेवक। सो हो क्यों न महंत ॥ ४ ॥

श्रीशीतल नाथ स्तुति ॥ १० ॥

निवारो शीतल भव आताप ॥ (टेक)
शीतल मिष्ट वचन मृदु थारे। स्वतः स्वभावही आप ॥
खल कृत कटुक कठोरवचनका। नाशत तामस ताप॥१॥
जन्म न मरण जरा गद दों का। फैला विश्व प्रताप ॥
सो तुम अजर अमर पद पाके। नाशा सर्वकलाप ॥ २ ॥
वसु विधिने जग जीव सताये। करते नित्य विलाप ॥
सो विधि ध्यान अग्निमें दहितुम। उड़ादये कर भाप ॥३॥
है तुम सुयश प्रगट त्रिभुवनमें। संतकरत गुण जाप ॥
नाथूराम जिन भक्त होत क्षय। जन्म २ के पाप ॥ ४ ॥

श्रीश्रेयान्सनाथ स्तुति ॥ ११ ॥

जपों मैं श्रीश्रेयान्स जिनेश ॥ (टेक)
श्रेय रूप प्रभु श्रेयके कर्त्ता। जग जनको परमेश ॥
भवि जीवोंके हेतु तुम्हारा। श्रेय रूप आदेश ॥ १ ॥

द्वादश सभा भई अति प्रफुलित। सुनत श्रेय उपदेश॥
श्रेय रूप ध्वनि घन गर्जनसी। झेलत ताहि गणेश॥२॥
जाति विरोध तजा सब जीवन। क्रीड़त नकुलरुशेश॥
श्रेय हेत नित तुम गुण गावत। मुनि गण और सुरेश॥३॥
सत्य नाम श्रेयान्स तुम्हारा। नाश करो भव क्लेश॥
नाथूराम जिन भक्त तुम्हारी। जाचत भक्त हमेश॥४॥

श्रीवासपूज्य स्तुति॥१२॥

तुम्हारे युगल चरण गुण राश॥ (टेक)
दीजै वास पूज्य युग पद तट। पूरे जनकी आस॥
पूज्य वास प्रभु तुम पद तटका। नाशक वसुविधि त्रास१
तीर्थरूप तीरथके कर्त्ता। दाता शिव पुर वास॥
अजर अमर पद बहु भवि पाया। जो आये तुमपास॥२॥
गणधरादि मुनि तुम गुण गावें। प्रगट विश्व इतिहास॥
जैसे बाल वृद्ध सब जानत। अनुपम भानु प्रकाश॥३॥
वसु विधि शत्रु प्रगट जो जगमें। जाले ध्यानहुतास॥
नाथूराम जिन भक्त दासके। कीजे अघ रिपु नाश॥४॥

श्रीविमलनाथ स्तुति॥१३॥

प्रभुजी विमल विमल करो आज॥ (टेक)
अघ मल मलिन जगति जन सबही। मोह राजके राज॥
कलिमल मोह नाशिके सबही। विमल भये जिनराज॥१॥
लोभ महामलसे अच्छादित। अदना अरु महाराज॥
सो तुम विश्व लखि इम त्यागी। ज्यों कांचुलि अहिराज॥२

राग द्वेष मिथ्या तरु अव्रत। इत्यादिक अघ साज॥
सम्यक जलसे धोय बहाये। शुद्धातमके काज॥ ३॥
निर्मल ज्ञान स्वरूप विराजत। जैसे तुम शिवराज॥
नाथूराम को तैसा कीजे। विमल गरीब निवाज॥ ४॥

श्रीअनंतनाथस्तुति॥ १४॥

प्रभुजी तुम गुणका नहीं अंत॥ (टेक)
ज्यों आकाश महा विस्तीर्ण। अंगुलसे न नपंत॥
अथवा मेघ बूंदकी गणना। को मुखसे उचरंत॥ १॥
गण धरादिसे थकित भये जो। चारि ज्ञान धर संत॥
तो तुम गुणका अंत न प्रभुजी। सार्थक नाम अनंत॥ २॥
दर्शन ज्ञान और सुख वीर्य। ये अनंत भगवंत॥
चारोंही एकत्र तुम्हारे। राजत त्रिभुवन कंत॥ ३॥
अनुपम गुणके कोष जिनेश्वर। त्रिभुवन माहिं महंत॥
नाथूराम जिन भक्त तुम्हारे। नित गुण गान करंत॥ ४॥

श्रीधर्मनाथ स्तुति॥ १५॥

उतारो धर्म पोत धर धर्म॥ (टेक)
उभय प्रकार धर्म मुनि श्रावक। जीव दया मय पर्म॥
शिव मग भासक ज्ञान प्रकाशक। दीजे नाशक कर्म॥ १॥
वसु विधिने जगजीव सताये। बतला पंथ अधर्म॥
मोह महा मद-प्यास सबोंको। अधिक बढ़ाया भर्म॥ २॥
थकित भये मग पावत नाहीं। निज पुरका सुखसर्म॥
चहुँ गति भार बहुत निशि वासर। तजि निजबल भये नर्म ३

अवतक प्रभु तुमको बिन जाने। भव २ लयो असर्म ॥
नाथूराम जिन भक्त तुम्हारा। जाना अब प्रभु मर्म॥ ४ ॥

श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥ १६ ॥

मैं वंदों जय जय शांति जिनेश ॥ (टेक)
भव आताप जगति जन दाहे। सहत प्रचुर नित क्लेश ॥
ता नाशंन सम्यक जल वर्षा। कीनी तुम परमेश ॥ १॥
कर्मोंरगके गलोंदयसे। वाधक रंक नरेश ॥
सो तुम वचन सुधाकर सींचे। कर विहार बहुदेश ॥ २ ॥
शांति दशा तुम्हरी लखि हिंसक। सौम भये हरि शेश ॥
दया धर्म बहु जीवन धारा। सुनि प्रभु तुम उपदेश ॥३॥
तुम पद सेय बहुत भवि तरिगये। बहुतक भये सुरेश ॥
नाथूराम जिन भक्त तुम्हारा। गावत सुयश गणेश ॥ ४॥

॥ श्रीकुंथुनाथ स्तुति १७ ॥

जपों मैं श्रीपति कुंथु कृपाल ॥ (टेक)
कुंथू आदि सूक्ष्म जीवोंसे। गजतक महा विशाल ॥
तिन सबकी तुम रक्षा कीनी। सत्य कुंथु जगपाल ॥ १ ॥
जीव दया मय धर्म प्रकाशक। नाशक बहुविधि जाल ॥
भासग ज्ञेय द्रव्य गुण पर्यय। युगपत तीनों काल ॥ २॥
कुंथुनाथ शुभ नाम तुम्हारा। सार्थक परम दयाल ॥
इंद्रादिक बुध तुम गुण गावत। नावत तुमपद भाल ॥३॥
बहुतक जीवतरे अरु तरिहैं। सुनि तुम वचन रसाल ॥
नाथूराम जिन भक्त धरी जिन। निजघट तुमगुणमाल ॥४

श्रीअरहनाथ स्तुति ॥ १८ ॥

अरह प्रभु मेरे अरि करो चूर ॥ (टेक)
वसु विधि अघ निधि मोहादिक ये । महाबली अतिक्रूर ॥
दुर्ध्यानादि मित्र बहु तिनके । पुष्ट कुधी भरपूर ॥ १ ॥
तीन लोक में व्यापि रहे ये । शूरन में महांशूर ॥
तुमसे नाशि ये ऐसे भागे । ज्यों रविसे तम दूर ॥ २ ॥
जयवंते जग माहिं रहो प्रभु । बढ़े सुयश जगभूर ॥
जन्मन मरन जरा गद हरिके । राखो आप हजूर ॥ ३ ॥
इस संसार रोगके हर्ता । तुमहि सजीवन मूर ॥
नाथूरामका भवगद नाशो । बाजें आनंद तूर ॥ ४ ॥

श्रीमल्लिनाथ स्तुति ॥ १९ ॥

तुम्हीं हो सांचे श्री मल्लेश ॥ (टेक)
मल्लनि में महा मल्ल मोह भट । देत जगति को क्लेश ॥
ताको ध्यान गदा कर चूरो । क्षण में मल्लि जिनेश ॥ १ ॥
काम महा भटको यों मारा । गज को यथा मृगेश ॥
अब प्रभु मेरी हरो असाता । वेदना रहै न लेश ॥ २ ॥
रहों सदा आरोग्य तुम्हारे । गाऊं गुण परमेश ॥
तुमसे दाता छोड़ दयानिधि । किसके जाऊं पेश ॥ ३ ॥
संकट मोचन विरद तुम्हारा । गावत सुयश सुरेश ॥
नाथूराम जिन भक्त दासपर । कीजे कृपा महेश ॥ ४ ॥

श्रीमुनिसुव्रतनाथ स्तुति ॥ २० ॥

त्रिजग पति श्रीमुनि सुव्रत देव ॥ (टेक)
श्रेष्ठ महाव्रत धारक जो मुनि । तिन पति तुम जिनदेव ॥

यासे सत्य नाम मुनि सुव्रत। नाथ तुम्हारा एव ॥ १ ॥
मुनि गण तुमसे धारि महाव्रत। करी सदा पद सेव ॥
यासे पति तुम हो मुनि गणके। व्रत दाता स्वयमेव ॥२॥
बिन कारण तुम जग हितकारी। धन्य तुम्हारी टेव ॥
को कवि महिमा कहे प्रभूजी। नाहीं गुणोंका छेव ॥ ३ ॥
अब प्रभु भव दुःख हरो हमारा। दीन जान सुधि लेव ॥
नाथूराम जिन भक्त दासको। धर्म पोत धर खेव ॥ ४ ॥

श्रीनेमिनाथ स्तुति ॥ २१ ॥

मैं वंदों श्रीनमिनाथ जिनेंद्र ॥ टेक ॥
पंद्रह मास रत्न बरसाये। हरि आदेश धनेंद्र ॥
जन्मतही ऐरापति सजके। आये सर्व सुरेंद्र ॥ १ ॥
विनय सहित हरिने प्रभु लेके। थापे आप गजेंद्र ॥
जय जय शब्द करत सब सुरगण। गये कनिक नागेंद्र ॥२॥
पांडु शिला पर थापि प्रभूको। न्हौन कराया इंद्र ॥
वस्त्राभरण सजाय लाय पुर। सोंपे विजय नरेन्द्र ॥ ३ ॥
तांडव नृत्य नृपति गृह करके। स्वर्ग गये त्रिदशेंद्र ॥
नाथूराम जिन भक्त रहो नित। जयवंते तीर्थेंद्र ॥ ४ ॥

श्रीनेमिनाथ स्तुति ॥ २२ ॥

जगतिपति यदुकुल तिलक विशाल ॥ टेक ॥
पशु बंधन लखि कंकण तोड़े। करुणासागर हाल ॥
मुकुट पटकि प्रभु संयम लीना। चढ़ि गिरि नारि कृपाल ॥
राज मतीको दिक्षा दीनी। श्रीपति दीनदयाल ॥

ता प्रसाद त्रिय लिंग छेदके । भयो सुदेव रसाल ॥
रथ चारित्र चलावन को तुम । सार्थक नेमि कमाल ॥
इंद्रादिक तुम चरण कमलको । नावत प्रतिदिन भाल॥३॥
करुणासिंधु दया कर जनके । काटो वसु विधि जाल ॥
नाथूराम जिन भक्त तुम्हारी । नित्य जपें गुणमाल ॥ ४॥

श्रीपारसनाथ स्तुति ॥ २३ ॥

जपों मैं पारस प्रभु सुखकंद ॥ टेक ॥
उग्र वंश मणि अश्वसेन नृप । तिन सुत त्रिभुवन चंद्र ॥
उरग चिह्न लखि प्रभु पद वंदों । होंय कर्म रिपु मंद ॥ १॥
जन्म पुरी शुभ नग्र बनारस । वामा देवी के नंद ॥
अहि दम्पति तुम वचन सुनत भये । पद्मावति धरनेंद्र ॥
श्याम वरण तनु सजल जलद सम । दर्शत हो आनंद ॥
कमठ दुष्ट उपसर्ग किया तब । कीनी सेव फनेंद्र ॥ ३ ॥
तुम गुण माल जपत इंद्रादिक । गावत विरद गणेंद्र ॥
नाथूराम जिन भक्त जगतिसे । तारक तुमही जिनेंद्र ॥४॥

श्रीमहावीरस्वामीकी स्तुति ॥ २४ ॥

मैं वंदों सन्मति श्रीजिनदेव ॥ (टेक)
महावीर महाधीर वीर पति । वर्द्धमान स्वयमेव ॥
इत्यादिक बहु नाम तुम्हारे । नाहीं गुणों का छेव ॥ १ ॥
भव तन भोग विनश्वर जाने । हेय गिनी जग टेव ॥
राज काज अघ साज जान तज । कीना तप बहुभेव ॥२॥
घाति कर्म हति जगदुख घाता । पतितन को दे ठेव ॥

(टेक)

नाभि नृपति कुल गगण दिवाकर भवि सरोज विगसन नामी
शिव सुखदाता त्रिजगति त्राता ना हरि हर क्रोधी कामी२
तुम पद पद्म गंध अलि सेवत अनागार अरु भवि धामी ३
है नाथूराम की विनय यही ना होय भ्रमण भव आगामी॥४॥

तथा ॥ २ ॥

श्रीपति करुणाकर वीर धीर भव भ्रमणहरो प्रभुजीमेरा(टेक)
भववन गहन भ्रमत चिर वीता करत तहीं फिर२फेरा॥ १॥
जग हितकारी वानि सुधारी प्रगट विरद जगमें तेरा ॥ २॥
सुर नर मुनि खग तुम यश गावत पावत शिव अविचलडेरा३
नाथूराम को हे जगदीश्वर करो पद्म पद का चेरा ॥ ४॥

तथा ॥ ३ ॥

वामानंदन प्रभु पारसके पद जजत होत अघ क्षार क्षार(टेक)
उग्रवंश मणि अश्वसेन नृप तारक भवोदधि पार पार॥ १॥
जन्म पुरी शुभ नगर वनारस वसत गंग तट सार सार॥ २॥
सुर नरादि पद वंदत जिनके कहत वचन मुख तार तार॥ ३
नाथूराम जिन भक्त नवत नित चरण कमल को वार वार ४

दादरा ॥ १ ॥

कीजे आप समान, मेरे प्रभुहो कीजे आप समान॥ (टेक)
और देव सब स्वारथी हैं, चाहत अपना मान॥ १॥
तुम निज गुण दातार हो जी, दीजे निज गुण दान ॥ २॥
देत न तुम गुण घटत हैं जी, तुम अक्षय गुणवान॥ ३॥

नाथूराम ज्यों दीपसेती, जोवत दीप न हान ॥ ४ ॥

दादरा ॥ १ ॥

करत चेत न प्राणी बहिरमुख ॥ (टेक)

तन धन यौवन लोग कुटुम सब, क्षण भंगुर जिंदगानी ॥१॥
विषय भोग में मग्न अहो निशि पर संगति रुचि ठानी ॥२॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म जजे नित, शून्य हृदय दुर ध्यानी ॥३॥
नाथूराम कहें मूढ़ सुनेना, हित कर्त्ता जिन वानी ॥ ४ ॥

तथा ॥ २ ॥

प्रेम कर जिनवानी सुनो भवि ॥ (टेक)

भव अज्ञान ताप तम नाशक, चंद्रकला सुख दानी ॥ १ ॥
भवि चातकके तुष्ट करनको, स्वात रिक्षका पानी ॥ २ ॥
जन्मन मरन जरा गद नाशक, भाषी केवल ज्ञानी ॥ ३ ॥
नाथूराम जिन भक्त नवें नित, तास पद रुचिठानी ॥ ४ ॥

तथा ॥ ३ ॥

जिन दर्शन सुखकारी जगतमें ॥ (टेक)

जिन मुख लखत नशत मिथ्यातम, प्रगटति सुमति उजारी १
सम्यक रत्नत्रय निधि दाता, अष्ट कर्म क्षयकारी ॥ २ ॥
जीव अनेक तरे दर्शनसे, पाया शिव सुख भारी ॥ ३ ॥
नाथूराम जिन भक्त दरशसे प्रगटत सुख अधिकारी ॥ ४ ॥

पद ॥ १ ॥

नेमिं प्रभू विन कैसे रहों मैं ॥ (टेक)

नौ भवसे मेरी प्रीति लगी है, ताका अंतर कैसे सहोमैं ॥१॥

तीरथपतिसे पतिको पाके, औरनसे पति कैसे कहों में ॥२॥
तारण तरण जान प्रभु पाके, भवसागरमें कैसे बहों में ॥३॥
नाथूराम त्रिजगति-पति पाके, औरनके पद कैसे गहों में ॥४॥

पद ॥ १ ॥

चेतकर मन मेरे अरज प्रभुसे अब कीजे ॥ (टेक)
और देवकी सेवसेजी, धर्म गिरहका छीजे ॥ १ ॥
वे त्रिभुवनके नाथ हैंजी, कार्य तेरा सीजे ॥ २ ॥
अब जिनके सुप्रताप सेजी, रूप निज लखि लीजे ॥ ३ ॥
नाथूराम दृढ़ राखके चित, प्रभु चरणोंमें दीजे ॥ ४ ॥

पद ॥ २ ॥

हे प्रभु हूजे दयाल, अरज जनकी सुन लीजे ॥ (टेक)
आठ कर्म प्रभु हैं बली ये, इनसे कुछ न वशीजे ॥ १ ॥
ये हमको दुःख देत हैं जी, इनको क्षय कर दीजे ॥ २ ॥
तुम प्रसाद निश्चय प्रभूजी, कार्य मेरा सीजे ॥ ३ ॥
नाथूराम निज दासकोजी, प्रभु अविचल पद दीजे ॥ ४ ॥

पद ॥ १ ॥

श्री आदीश्वर भगवान, भव दुःख दूर करो ॥ (टेक)
भ्रमत २ चारों गतिमाहीं, बहुत भयो हैरान ॥ १ ॥
और कुदेवनकी सेवासे, भुगते दुःख महान ॥ २ ॥
अब आयो प्रभु शरण तुम्हारे, राखो सेवक जान ॥ ३ ॥
नाथूराम प्रभु थारी भक्तिसे, जांचत पद निर्वान ॥ ४ ॥

तथा ॥ २ ॥

पारस प्रभु होउ दयाल, विनती लखलीजे ॥ (टेक)
भटकत फिरत महाभव वनमें, बहुत भयो बेहाल ॥ १ ।
नरक त्रियंचनके दुःख भुगते पूरो करके काल ॥ २ ॥
देवनके सुखमें दुःख प्रगटो, जब मुरझानी माल ॥ ३ ॥
कठिन २ से नर भव पायो, अब कीजे प्रतिपाल ॥ ४ ॥
नाथूराम दोनोंकर जोड़ें, काटो कर्मोंके जाल ॥ ५ ॥

तथा ॥ ३ ॥

प्रभु दर्शन दीजै मोहि, श्रीमहावीर स्वामी ॥ (टेक)
दर्शन करत पाप सब नाशें, अशुभ कर्म क्षय होय ॥ १ ॥
तुम हो तारण तरण जिनेश्वर, तुम सम और न कोय ॥२॥
पावापुरसे मुक्ति गये प्रभु, कर्म कलंकहि धोय ॥ ३ ॥
नाथूराम प्रभुके दर्शनसे, अजर अमर पद होय ॥ ४ ॥

आरती ॥ १ ॥

तुम भवोदधि तारण सेत, श्रीजिनदेवहो ॥ (टेक)
आरति तुम्हरी मैं करों जिनदेवहो, निज अराति निवारण हेत श्रीजिनदेवहो ॥ १ ॥ दीप किया भ्रम नाशने जिनदेवहो, मग दृष्टि पड़े शिवखेत श्रीजिनदेवहो ॥ २ ॥ नृत्य करों इस हेतुसे जिनदेवहो, भव भ्रमण मिटे दुःख देत श्रीजिनदेवहो ॥ ३ ॥ गावत गुण तुम्हरे प्रभू जिनदेवहो, भव रुदन हरोकर चेत श्रीजिनदेवहो ॥ ४ ॥ नाथूराम शिव बासको जिन देवहो, करें आरति भक्ति समेत श्रीजिनदेवहो ॥ ५ ॥

बधाई ॥ १ ॥

बाजें आनंद बधाइयां हो, नाभि नृपके द्वारे ॥ (टेक)
जन्म लिया श्री आदि जिनेंद्र,करन कल्याणक आये इंद्र।१।
मेरु शिखरपर वासव जाय, प्रभुजीका न्हौन किया हर्षाय।२।
कर शृंगार अवधि पुर ल्याय,तांडव नृत्य किया सुरराय॥३॥
नाथूराम वे त्रिभुवन ईश, राजत लोक शिखरके शीस ॥४॥

पद ॥ १ ॥

बंदे चंद्र प्रभु नाथ सफल जन्म भयो मेरा ॥ (टेक)
युग पद सफल भये चलते सफल भये चलते, पूजत भये युगहाथ ॥ १ ॥ लोचन सफल मुख दरशे सफल मुख दरशे, नवन करत भयो माथ ॥ २ ॥ रसना सफल गुण गायें सफल गुण गायें, मन लगें एक साथ ॥ ३ ॥ सीजत कार्य सब भये कार्य सब भये, नाथूराम सनाथ ॥ ४ ॥

देशका सोरठा ॥ १ ॥

स्वामी मेरा काटो करम कलेश,तुम विघ्न हरण वृपभेश(टेक)
त्रिभुवन भूपण हत दुःख दूपण थारा गावें सुयश सुरेश ॥१॥
अधमोद्धारक भवोदधि तारक जनको दाता हित उपदेश२॥
तुमसा दाता और न त्राता प्रभुजी ताके जाऊं पेश ॥ ३ ॥
नाथूराम जन जाचत निजधन यासे बाधा रहै न लेश ॥४॥

मल्हार ॥ १ ॥

थांको श्रीगुरु शिक्षा देत भली, क्यों ना चेतत चेतन प्यारे (टेक) मिथ्या तपन मिटी, दिशि प्रगटे, आनंद अम्बर

कारे ॥ १ ॥ जिन वच मेघ झरत अति शीतल, सम्यक बहति बयारे ॥ २ ॥ भवि चातक हित जान ग्रहणकर, नाशे कष्ट तृषारे ॥ ३ ॥ नाथूराम जिन भक्त कठिन है अवसर बारंबारे ॥ ४ ॥

गजल ॥ १ ॥

मिले दीदार पारसका, आरज़ूई हमारी है ॥ (टेक)
तआला हूतू दुनियामें, बयांकरे खल्क सारी है ॥
कत्ल दुश्मन किये आठो, राह जन्नत निकारी है ॥ १ ॥
मोह जालिमने खिल्कतके गले ज़ंजीर डारी है ॥
परेशां हैं सभीयासे ई बद मूजी शिकारी है ॥ २ ॥
मिहर बंदा पै अब कीजे, पेश अर्जी गुजारी है ॥
मेरे दुश्मन फना कीजे, मुझे तक़लीफ भारी है ॥ ३ ॥
नफर नथमलकी ऐकादिर गुजारिश बारबारी है ॥
करो हम्बार फिदवीको मिहरबानी तुम्हारी है ॥ ४ ॥

पद ॥ १ ॥

वृषभ पति जन्मे जग हितकारी ॥ टेक ॥
गर्भवाससे मास प्रथम छः हरिने अवधि विचारी ॥
धनद नग्र रचि मणि बरसाये, पन्द्रह मास त्रिवारी ॥ १ ॥
षट कुमारिका गर्भ सोधना करी प्रीति अति धारी ॥
सुरपति सुरयुत गर्भ महोत्सव कीना आनंदकारी ॥ २ ॥
जन्म समय हरि सुर गिरिजाके न्होन कराया भारी ॥
क्षीरोदधि जल सहस्र अठोत्तर घट भर धाराडारी ॥ ३ ॥

वस्त्राभरण सजाय लायपुर तांडव नृत्य कियारी ॥
तात मातको सौंपे श्रीजिन नाथूराम भवतारी ॥ ४ ॥

कवित्त ॥

सुनि जिन वानी जिन आनी निज उरमाहिं तेही भव्य प्राणी शिवरानी डर भाये हैं ॥ १ ॥ वसु विधि मलहर आपको विमल कर जन्म जलधि तरि शिवलोक धाये हैं ॥ २ ॥ वसु गुण व्यवहार निहचे अनंत धार लोकालोक ज्ञाता जगत्राता कहलाये हैं ॥ ३ ॥ नाथूराम सदा काल वसि हैं त्रिजग भाल तिनके सरोज पद अंग वसुनाये हैं ॥ ४ ॥ तीनों लोक घूम आया तुझसा तो कहीं न पाया जैसा रूप गाया वेद शास्त्र वीच खासा है ॥ आठो कर्म डारे चूर जगमें जो महाशूर मेरा दुःख होय दूर पूरे तव आशा है । त्रिभुवन पति पाया नाम फिर क्यों सिद्ध होन काम एक ग्राम पती वनी देत सो दिलाशा है । नाथूराम जिन भक्त जानत तू ज्ञेय व्यक्त बैठा है मोक्ष वीच देखता तमाशा है ॥ २ ॥

पद ॥ १ ॥

सुर नर नाग खगेंद्र वृंद मुनि तुम गुण गान करें ॥ (टेक)
पूर्व कृत दुःकृत सव हरके पुण्य भंडार भरें ॥ १ ॥
सम्यक दर्शन ज्ञान चरण लहि पुनि भवसिंधु तरें ॥ २ ॥
नाथूराम धाम वसि शिवके फिर जन्में न मरें ॥ ३ ॥

पद ॥ १ ॥

शिखर सम्मेदके दरश करनको चलो भविकमनल्यापरे(टेक

बीस टोंक से बीस जिनेश्वर अरु असंख्य मुनिरायरे ॥
नित्य निरंजन सिद्ध भये हैं आठो कर्म खिपायरे ॥ १ ॥
जो भवि वंदना करें तहां की शुद्ध वचन मन कायरे ॥
नर्क त्रियंच तजे गति दोनों सुर नर के सुख पायरे ॥ २ ॥
निकट भव्य वह कुछ भव धर के होंहै शिव पुर रायरे ॥
यासे भव्य सफल भव कीजे श्रावक कुल में आयरे ॥ ३॥
नाथूराम जिन भक्त तहां के वंदन को हर्षायरे ॥
वार २ अनुमोदन राखो फिर २ वंदो जायरे ॥ ४ ॥

पद ॥ १ ॥

हे प्रभु जनकी विनय सुनीजे । जन्म जलधि के पारकरीजे
(टेक)

भ्रमण करत चिरकाल व्यतीतो, तुम विन यह भव फंद नछीजे ॥ १ ॥ गणधरादि मुनि तुम गुण गावत, यासे प्रभु इतना यश लीजे ॥ २ ॥ अष्ट कर्म अरि नित्य सतावत, इन नाशन को अनु भव दीजे ॥ ३ ॥ जव तक ये खल कर्म नशेंना, नाथूराम को सेवक कीजे ॥ ४ ॥

चौवीस तीर्थंकर स्तुति (विनती)

दोहा—

चौवीसो जिन पद कमल, वन्दन करों त्रिकाल ।
करो भवोदधि पार अव, काटो वसु विधि जाल ॥ १॥

(चाल जगति गुरुकी)

ऋषभ नाथ ऋषि ईश तुम ऋषि धर्म चलायो ।

अजित अजित अरि जीति वसु विधि शिव पद पायो ॥२॥
संभव संभ्रम नाशि बहु भवि बोधित कीने ॥
अभिनन्दन भगवान अभिरुचि कर व्रत दीने ॥ ३ ॥
सुमति सुमति वरदान दीजे तुम गुण गाऊं ॥
पद्म प्रभु पद पद्म उर धर शीश नवाऊं ॥ ४ ॥
नाथ सुपारस पास राखो शरण गहों जी ॥
चंद्रप्रभु मुखचंद्र देखत बोध लहों जी ॥ ५ ॥
पुष्प दंत महाराज विगशित दंत तुम्हारे ॥
शीतल शीतल वैन जग दुखहरण उचारे ॥ ६ ॥
श्रेयान्स भगवान श्रेय जगति को कर्त्ता ॥
वास पूज्य पद वास दीजै त्रिभुवन भर्ता ॥ ७ ॥
विमल विमल पद पाय विमल किये बहु प्राणी ॥
श्री अनंत जिनराज गुण अनंत के दानी ॥ ८ ॥
धर्मनाथ तुम धर्म तारण तरण जिनेश ॥
शांतिनाथ अघ ताप शांति करो परमेश ॥ ९ ॥
कुंथुनाथ जिनराज कुंथु आदि जीपाले ॥
अरह प्रभू अरि नाशि बहु भवि के अघ टाले ॥ १० ॥
मल्लि नाथ क्षण माहिं मोह मल्ल क्षय कीना ॥
मुनि सुव्रत व्रत सार मुनिगण को प्रभु दीना ॥ ११ ॥
नमि प्रभुके पद पद्म नवत नशें अघ भारी ॥
नेम प्रभू तजि व्याह जाय वरी शिवनारी ॥ १२ ॥
पारस सुवर्ण रूप बहु भवि क्षणमें कीने ॥

वीर वीर विधि नाशि ज्ञानादिक गुण लीने ॥ १३ ॥
चार बीस जिन देव गुण अनंत के धारी ॥
करों विविध पद सेव मेंटो व्यथा हमारी ॥ १४ ॥
तुम सम जग में कौन ताका शरण गहीजै ॥
यासे मांगों नाथ निज पद सेवा दीजै ॥ १५ ॥

दोहा ।

नाथूराम जिन भक्त का, दूरकरो भव वास ॥
जब तक शिव अवसर नहीं, करो चरण का दास ॥ १६ ॥

पद ।

श्री जिन वाणि नजिन पहिचानी ते मूर्ख मिथ्या श्रद्धानी ॥ टेक ॥ नृप विक्रम से प्रथम ही मुनिवर एक अंग के रहे नज्ञानी॥जहां ऐसी विक्षिप्त भई तहां द्वादशांग की कौन कहानी तिसपर काल दोष से राजा जिनमत द्वैषी अति अभिमानी२॥प्रगट भये तिन जिनशासन के फूंके ग्रंथ डुबाये पानी ॥सोलखी परिहार प्रमर चौहान विप्र आज्ञाजिन मानी जैन नष्ट कर आप भ्रष्ट हो पल भक्षी भये मदिरापानी॥३॥ भूपति के आधार धर्म मर्याद भये सोतो दुर्ध्यानी ॥ तब तहां शुद्ध दिगम्बर मुद्रा किमि निवहें जहां नीति नशानी॥४ ॥ बन तजि जिन गृहका आश्रयले रहे क्वचित मुनिजहां तहां ज्ञानी ॥ सिंह वृत्य तजि स्यारवृत्य सजि श्रुताभ्यास में निज रुचि सानी ॥ ५ ॥ तिन फिर श्रुत संस्कृत पराकृत मति अनुसार रचे सुन प्रानी ॥ तथा क्षिन्नग्रंथोंकाआश्रय

पाय क्वचित रचना तिन ठानी ॥ ६॥ रक्त श्वेत अम्बरी ढोंढ़िया तथा दिगम्बर आदि निशानी ॥ धरि आचार्य मुनि भट्टार्क यती आदि पद संज्ञा आनी ॥ ७ ॥ तहां दिगम्बर मुनि भी गादि बंध भये यह बात न छानी ॥ देव सिंह नंदी रु सेन ये चार संग प्रगटे अगवानी ॥ ८ ॥ दिन प्रति शिथिलाचार बढ़ावत गये करी रचना मन मानी ॥ गृह वासी हो राखि परि ग्रह वर्ति अवार रहे हो मानी॥ ९॥ तिन भेषिन के कथित ग्रंथ बहु पढ़त सुनत श्रावकनितआनी करत परीक्षा रंचन तिन की बने फिरें गाढ़ श्रद्धानी ॥१०॥ प्रगट असंभव कथन जिन्हों में तथा विपर्यय रीतिवखानी कथन परस्पर मेल न खाता तौ भी शुद्ध कहत जिनवानी११ जिनवर उक्त वचन जोइन में पाये जात क्वचित अमलानी॥ सो उपकारक भवोदधि तारक जयवंते वर्तोसुखदानी॥१२॥ श्वेत२सब लखत एक से करें कपूर कपास अज्ञानी ॥ जैनाभास आप को मानत जिन आज्ञा सम्यक हममानी१३ भवसागर के पार करन को धर्म पोत निश्चय हम जानी॥दृढ़ तर छिद्र रहित आदिक गुण तामेंलखनाबुद्धिसयानी॥१४॥ जिस नवका में चढ़त चहत निज करो परीक्षा तस भ्रम भानी औरन की निंदा करने सें करो न आश वरन शिव रानी१५ त्यों ही दोष जैन ग्रंथों के देख दूर कीजे पहिचानी ॥ नाथूराम काम यह पहिला मतवारा पनछोड़ो ज्ञानी ॥ १६ ॥

इति ज्ञानानन्द रत्नाकर समाप्त ॥

सूचना ॥

पहिले की जोरमेरी लिखी पुस्तकें इन लावनी भजनोंकीहै
उनमें जोर शब्द मुझे अब असुंदर जान पड़े वे यहां कोई प
लट दिये हैं जिस से अब इन्हींके अनुसार बदल लेना चा
हिये क्योंकि हर किसीकार्यके प्रारंभमें जोकर्त्ताकी बुद्धिहो
तीहै वह कार्य करतेर भजजाती है तब उसीको अपना पहि
ला काम कुछ कुढंगा दीखने लगता है इससे शब्द बद
लनेमें कुछ बुराई न जानना ॥

जाहिरात।

श्रीमद्भागवत संस्कृत तथा भाषा-टीका सहित।

श्रीवेदव्यासप्रणीत श्रीमद्भागवत सबसे कठिनहै और इसकाप्रचार भरतखण्डमें सबसे अधिक है यह ग्रंथ क्लिष्टताके कारण सर्व साधारण लोगोंको टीका होनेपर भी अच्छी रीतिसे समझना कठिन था कोई २ स्थलोंमें बड़े २ पण्डितोंकी भी बुद्धि चक्करमें पड़जाती थी, इसलिये विना संस्कृत पढ़े सर्व साधारण पण्डित व स्वल्प विद्याजाननेवाले भगवद्भक्तोंके लाभार्थ संस्कृत मूल व अतिप्रिय ब्रजभाषा टीकासहित जोकि हिन्दी भाषाओंमें शिरोमणि और माननीयहै उसी भाषामें टीका बनवाकर प्रथमावृत्ती छपायाथा वह बहुतही जल्दी हाथोंहाथ विकगई, फिर द्वितीयावृत्तिभी विकगई अब इस्की तृतीयावृत्ति द्वितीयावृत्तिकी अपेक्षा अच्छी तरह शुद्ध करवाके मोटे अक्षरमें छपायाहै और भक्ति ज्ञानमार्गी ५०० अतीव मनोहर दृष्टांत दिये हैं. कागज विलायती बढ़िया लगायाहै, माहात्म्य पद्याध्यायी भाषाटीका सहित इस्के साथहीहै, प्रथमावृत्तिमें मूल्य १५ रुपया था इस आवृत्तिमें केवल १२ बाराही रुपया रक्खा है.

पद्मपुराण समग्र सातो खंड ५५००० ग्रंथ छपातयार है मूल्य डाकव्यय सहित केवल १८ रु० मात्र अर्थात् १८ रु० भेजनेसे घर बैठे ग्रंथमिलजावेगा-

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण।

श्रीवाल्मीकीय रामायण २४००० ग्रंथका सरलसुबोध ब्रजभाषाटीका बनवाकर छापके तयार किया है जिसके बीचमें मूल और नीचे ऊपर भाषाटीका है. और एक वाल्मीकीय रामायणका भाषावार्तिक छपा है. जिसमें